व्यावसायिक निर्देशन (Vocational guidance)

व्यावसायिक निर्देशन (Vocational guidance) व्यावसायिक चुनाव की प्रक्रिया से थोड़ा भिन्न है। यहाँ कर्मचारियों का चुनाव नहीं होता वरन् चुनाव से पूर्व उस अभ्यर्थी में किस खास प्रकार की विशेषताएँ हैं उसका पता लगाना और उस दिशा में उसे निर्देशित करना है ताकि वह अपने जीवन में सफल हो सके। इस प्रक्रिया से अभ्यर्थी को अपने आपको सुधारने का मौका मिलता है। व्यावसायिक निर्देशन का मुख्य उद्देश्य व्यक्ति की मदद करना तथा व्यावसायिक अभियोजन के लिए आवश्यक है।

जोन्स (Jones, 1973) ने इसे इस प्रकार से पारिभाषित किया है, ''व्यावसायिक निर्देशन व्यक्ति को सहायता प्रदान करने की वह क्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति अपने लिए कोई उपयुक्त व्यवसाय चुनता है, उसके लिए तैयार करता है, उसे अपनाता है तथा उसमें प्रगति करता है। इसका मुख्य कार्य व्यक्ति को अपने भविष्य के सम्बन्ध में ऐसे निर्णय एवं चयन करने में सहायता करना होता है जो उसके संतोषजनक व्यावसायिक समायोजन के लिए आवश्यक होता है। "Vocational guidance is an attempt in which he can select for himself proper job, can prepare himself for that job and improve".

क्रो एवं क्रो (Crow & Crow) के अनुसार, ''व्यावसायिक निर्देशन की व्याख्या साधारणतः उस सहायता के रूप में की जाती है जो छात्रों को किसी व्यवसाय को चुनने उसके लिए तैयारी करने और उन्नति करने के लिए की जाती है।'' "Vocational guidance usually is interpreted as the assistance given to learn to choose, prepare for and progress in an occupation".

इस प्रकार व्यावसायिक निर्देशन का मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित है–

1. व्यक्ति को योग्यतानुसार कार्य चुनने में सहायता देता है।
2. अलग-अलग व्यवसायों के बारे में सूचना प्रदान करता है।
3. देश और समाज की आर्थिक उन्नति के लिए मानवीय उपयोगिता का ज्यादा-से-ज्यादा उपयोग प्रदान करता है।
4. लोगों को कुण्ठा से बचाता है।

व्यावसायिक निर्देशन में व्यवसाय और कर्मचारी दोनों के विषय में उसकी बुद्धि, मानसिक योग्यताएँ, अभिरुचि, अभिवृद्धि, शैक्षणिक योग्यता, शारीरिक विकास और स्वास्थ्य, लिंग, उम्र, आर्थिक स्तर, व्यक्तित्व के शीलगुण आदि को जानना उसकी मदद करने के लिए आवश्यक है।

निर्देशक को व्यक्ति के साथ सम्पूर्ण व्यवसाय जगत की भी जानकारी होनी चाहिए, कितनी तरह के व्यवसाय हैं, उनके लिए किस तरह की योग्यता होनी चाहिए। व्यवसाय सम्बन्धी जानकारी कहाँ मिलेगी–पत्र-पत्रिकाओं, रेडियो, टेलीविजन इत्यादि से।

व्यावसायिक निर्देशन तथा व्यावसायिक चुनाव में समानता के साथ-साथ कुछ भिन्नताएँ भी हैं जो इस प्रकार हैं–

1. **क्रम में अन्तर (Difference in order) :** इन दोनों में व्यावसायिक निर्देशन की आवश्यकता पहले होती है चुनाव की बाद में, क्योंकि चुनाव से पहले किसी भी व्यक्ति को निर्देश देने की आवश्यकता होती है।

2. **क्षेत्र (Field) :** व्यावसायिक निर्देशन का सम्बन्ध मुख्य रूप से शिक्षा से सम्बन्धित होता है जबकि चयन का सम्बन्ध मुख्य रूप से औद्योगिक क्षेत्र से होता है।

3. व्यापकता (Adequacy) : व्यावसायिक चयन की अपेक्षा व्यावसायिक निर्देशन का क्षेत्र बड़ा होता है। निर्देशन के दौरान व्यक्ति के व्यक्तित्व के समस्त गुणों एवं योग्यताओं का मापन किया जाता है। तत्पश्चात् उपयुक्त सुझाव दिया जाता है।

इसके विपरीत चयन की प्रक्रिया में व्यक्ति के व्यक्तित्व के उन्हीं गुणों और क्षमताओं का मापन होता है जो व्यवसाय के लिए आवश्यक होता है।

4. वर्त्तमान तथा भावी योग्यताओं में अन्तर (Difference between Present and future ability) : व्यावसायिक निर्देशन में वर्त्तमान तथा भावी दोनों योग्यताओं को जानने का प्रयास किया जाता है जबकि चुनाव में केवल वर्त्तमान योग्यता पर ध्यान दिया जाता है।

5. कार्य तथा कर्मचारी में अन्तर (Difference between work and employee) : व्यावसायिक निर्देशन के समय व्यक्ति मौजूद होता है, उसके लिए उपयुक्त व्यावसाय का चुनाव करना होता है जबकि व्यावसायिक चयन में व्यक्ति का व्यवसाय उपलब्ध नहीं होता है। व्यावसायिक निर्देशन में मुख्य समस्या सम्बन्धित व्यक्ति के लिए व्यावसाय को चुनना है तथा व्यवसायिक चयन में दिए गए व्यवसाय के लिए चयन की मुख्य समस्या होती है।

6. विश्लेषण (Analysis) : व्यावसायिक निर्देशन में व्यक्ति के गुणों का विश्लेषण किया जाता है जबकि व्यावसायिक चयन में कार्य का विश्लेषण किया जाता है। यानी उस कार्य के लिए किन योग्यताओं और क्षमताओं की आवश्यकता होती है।

इस प्रकार व्यावसायिक चयन और निर्देशन में अन्तर है परन्तु दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं।

6.2.3 कार्य विश्लेषण–अर्थ, विधियाँ एवं उपयोग (Job analysis Meaning, Method and Uses)

अर्थ (Meaning) : औद्योगिक क्षेत्र में सभी कार्यों की कुछ खास आवश्यकताएँ होती हैं तथा सभी व्यक्तियों के कुछ शीलगुण होते हैं। हर व्यक्ति प्रत्येक कार्य के लिए उपयुक्त नहीं होता है, न ही उसे अच्छी तरह कर पाता है। किसी उद्योग के लिए अगर उपयुक्त व्यक्ति का चुनाव होता है तो उत्पादन में वृद्धि होती है। कर्मचारी को संतुष्टि मिलती है और प्रबन्धन (Management) को समस्याओं का सामना नहीं करना पड़ता है।

उपयोगिता (Uses) : औद्योगिक संगठन को और बेहतर बनाने के लिए कार्य विश्लेषण की उपयोगिता है। इससे व्यक्तिगत फायदे भी है। कार्य विश्लेषण की एक व्यक्तिगत विशेषता है। इसका महत्व कर्मचारियों के प्रशिक्षण, चुनाव, तबादला, पदोन्नति और वेतन निर्धारण आदि के लिए कार्य विश्लेषण का महत्व है। मुख्य रूप से मानवीय शक्ति को बर्बाद करने से बचने के लिए तथा उत्पादकता को बढ़ाने के लिए कार्य-विश्लेषण का सहारा लिया जा सकता है।

जर्ग (Zerga, 1943) ने कार्य विश्लेषण की 20 उपयोगिताओं का वर्णन किया है। ये निम्नलिखित हैं–

— कार्यक्रमबद्ध और विश्लेषण करना,

— वेतन तय करना एवं उसकी एकरूपता;

— किराये पर रखने की जरूरतें;

— कार्य के कर्त्तव्यों और उत्तरदायित्व का स्पष्टीकरण;

— स्थानान्तरण और पदोन्नति;

— शिकायतों का आयोजन;

— प्रबन्धन और कर्मचारियों के बीच सामान्य समझौता की स्थापना;

— पदोन्नति की रूपरेखा एवं उसकी व्याख्या;

— दुर्घटनाओं की छानबीन;

— काम के गलत तरीकों एवं बारम्बरता को बताना;

— मशीनों का संचालन, रख-रखाव और अभियोजन;

— समय और गति का अध्ययन;

— मालिकों की सीमा;

— व्यक्तिगत गुणों का उल्लेख;

— व्यक्तिगत असफलता के कारणों का उल्लेख;

— शिक्षण और प्रशिक्षण;

— नियुक्ति को बढ़ाना;

— स्वास्थ्य और थकान का अध्ययन;

— वैज्ञानिक निर्देशन;

— कार्य चिकित्सा पद्धति के लिए उचित कार्य का निर्धारण।

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट है कि कार्य विश्लेषण का कितना महत्व है। ब्लम तथा नेलर (Blum & Naylor) के अनुसार, ''बहुत तरह से कार्य विश्लेषण, कार्यक्षमता का महत्वपूर्ण भाग है, साथ ही कर्मचारियों के आपसी कार्य सम्बन्ध को भी उन्नत करता है। इसे हम ऐसी नींव मान सकते हैं जिस पर कुशलता का तरीका बनाया जाता है।''

"In many respects, a job analysis is a vital part of working efficiency besides promoting smooth working relationships among the employees. It can be regarded as the foundation upon which a system of efficiency is built".

इस प्रकार कार्य मूल्यांकन कार्य के देखने की प्रक्रिया है जो चुनाव से पहले आवश्यक है। कार्य विश्लेषण की कुछ निम्नलिखित अन्य उपयोगिताएँ हैं–

— तर्कपूर्ण वेतन संरचना का आधार कार्य-विश्लेषण है;

— कर्मचारी तथा प्रबन्धन के बीच में असमानता को हटाना;

— व्यक्ति के पूर्वाग्रह को हटाना;

— सौहार्दपूर्ण वातावरण का निर्माण करना;

— वेतन के लिए वस्तुनिष्ठ आधार बनाना;

— कार्य के सभी तथ्यों का विश्लेषण;

— तुलनात्मक अध्ययन संभव;

— चयन की नियुक्ति में मूल्यों की कमी;

— कर्मचारियों का उत्थान।

प्रविधियाँ (Methods) : कार्य विश्लेषण के लिए मनोवैज्ञानिकों ने कई विधियों का उल्लेख किया है जिसमें मैककार्मिक तथा टीफिन (Mccormick & Tiffin, 1977) ने कार्य विश्लेषण को दो भागों में बाँटा है–

1. कार्य सूचना को जानने की विधि (Method of obtaining job information)
2. कार्य सूचना का स्वरूप (Nature of job information)

1. कार्य सूचना को जानने की विधियों में निम्नलिखित विधियाँ हैं–

(i) निरीक्षण (observation) : कार्य करते समय कर्मचारियों का विश्लेषण निरीक्षक के द्वारा होता है। यह उपयोगी विधि है परन्तु इसमें एक दुर्गुण है। निरीक्षण कर्त्ता को उसका पूर्वाग्रह (bias) प्रभावित कर सकता है।

(ii) साक्षात्कार (Interview) : कर्मचारियों से कार्यस्थल से बाहर प्रश्न पूछे जाते हैं तब उनका कार्य विश्लेषण होता है।

(iii) प्रश्नावली (Questionnaire) : प्रश्नावली सर्वप्रथम लिपमैन (Lipman, 1916) ने कार्य विश्लेषण के लिए बनायी थी। प्रश्नावली को कर्मचारी, निरीक्षक, अफसरों आदि को दिए तथा तीन तथ्यों के बारे में पूछा–

1. तुम्हारे कार्य के लिए किसी विशेष योग्यता की आवश्यकता है या नहीं है?

2. कौन-सी योग्यता की आवश्यकता समय-समय पर है या एकदम नहीं है?

3. कोई विशेष गुण शिक्षण से पूरी तरह से विकसित किया जा सकता है या नहीं किया जा सकता है?

ठीक इसी प्रकार की प्रश्नावली Ulrichs ने बनाई और प्रश्नों को मुख्य चार भागों में बाँटा–

(i) शारीरिक अभिरुचियाँ (Physical aptitudes)

(ii) मनोदैहिक अभिरुचियाँ (Psychophysical aptitudes)

(iii) मानसिक रुचियाँ (Mental aptitudes)

(iv) समायोजन (Adaptability)

(iv) कार्य सूचिका (Work Diaries) : इस विधि को स्वआकलन विधि भी कहते हैं। इसमें कर्मचारी को कुछ समय तक अपनी गतिविधियों को डायरी में क्रमबद्ध रूप से लिखने को कहा जाता है।(कुछ महीने, कुछ साल इत्यादि)।

इस विधि की बहुत ज्यादा उपयोगिता है क्योंकि कम मेहनत और खर्च में क्रमबद्ध सूचनाएँ प्राप्त हो जाती हैं। (Harne & Lupton, 1965) इस विधि की सबसे बड़ी बुराई है सूचनाएँ कभी-कभी क्रमबद्ध नहीं होती हैं तथा व्यक्ति अपनी बातें बढ़ा-चढ़ा कर लिखता है।

3. पिक्चर फिल्म (Moving Picture Films) : इस विधि पर प्रयोग टेलर तथा गिलब्रेथ (Taylor & Gilbreth) ने किया कार्य विश्लेषण के लिए। इस विधि में कार्य प्रगति को रिकार्ड (record) कर लिया जाता है। यहाँ पूर्वाग्रह का असर कम देखने को मिलता है।

4. तथ्यों का संकलन (Use of Source Material) : इस विधि में उद्योग में रख-रखाव के जो रिकार्ड होते हैं उनसे जानकारी ले ली जाती है तथा सारी जानकारी इसी से प्राप्त हो जाती है।

कार्य सूचनाओं के स्वरूप के अर्न्तगत निम्नलिखित प्रविधियाँ हैं –

(i) निबन्ध विधि (Essay Description Technique) : इस विधि में व्यक्तिगत विशेषताओं के आधार पर तथ्यों का संग्रह कर लिया जाता है जो चयन के लिए आवश्यक मानी जाती है। इस विधि का प्रयोग टिफिन (Tiffin) तथा मैक कार्मिक (Mccormick, 1971) ने किया।

(ii) कार्य चेक लिस्ट और प्रश्नावली (Job Checklist and Questionnaire) : इसमें कार्य प्रणाली से सम्बन्धित एक विशेष सूची बनाई जाती है जो अलग-अलग कर्मचारी के लिए होती है। चेकलिस्ट में व्यक्ति को यह बताना पड़ता है कि कोई खास प्रश्न (item) व्यक्ति के लिए उपयुक्त है या नहीं (Kay & Mayer, 1962) ।

(iii) कार्यक्रम विश्लेषण (Activity analysis) : इस विधि की दो विशेषताएँ हैं–

(a) यह नियमबद्ध और क्रमबद्ध (orderly & systematic) सूची तैयार करता है।

(b) यह कार्य के बारे में विस्तृत सूची रखता है। निरीक्षण तथा साक्षात्कार के बारे में कार्य विश्लेषण सूचना रखता है।

(iv) समय और गति अध्ययन (Motion and time study) : इसे गिलब्रेथ (Gilbreth) ने बनाया है। इसमें किसी भी कार्य की प्रारम्भिक गति को पहचाना गया तथा कार्य पूरा करने में कितना समय लगता है जबकि समय सीमा भी निश्चित होती है। यह विधि वैज्ञानिक है तथा इसमें कम खर्च भी होता है।

(v) आलोचनात्मक घटना विधि (Clinical incident technique) : इसके अन्तर्गत कार्य, परिभाषा, चयन तथा विश्लेषण और मानदण्डों का विकास होता है। इसके अन्तर्गत कार्य व्यवहार की सूची तथा चेकिंग आती है, ये कार्य धनात्मक (Positive) तथा ऋणात्मक (Negative) दोनों आते हैं। (Flanagan, 1954)

(vi) समूह साक्षात्कार विधि (Group interview method) : जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है इस विधि में समूह में साक्षात्कार होता है तथा सारे तथ्यों को एक कार्य विशेष के लिए इकट्ठा कर लिया जाता है। इससे समय, मेहनत तथा धन की बचत होती है।

(vii) यांत्रिक संगोष्ठी विधि (Technical conference method) : इसमें प्रबन्धन तथा विशेषज्ञ कार्य के विषय में सूचनाएँ इकट्ठा करते हैं तथा उनका विश्लेषण खुद करते हैं।

(viii) कार्य सहभागी विधि (Work Participation method) : यहाँ विशेषज्ञ अपने आप को उस कार्य का सहभागी बनाकर उनकी कमियों और विशेषताओं का सीधा ज्ञान प्राप्त करता है। यह विधि अधिक समय, परिश्रम लगाती है तथा मँहगी है। विश्लेषक को कार्य के विषय में पूरा प्रशिक्षण होना चाहिए। इसमें दो अन्य विधियों का भी प्रयोग किया जाता है।

(क) बाह्य पसन्द विधि (Forced choice technique)

(ख) रेटिंग प्रणाली (Rating system)

6.2.4 कार्य विश्लेषण विधियाँ (Method of Work Analysis)

इस प्रक्रिया में मुख्य रूप से तीन तरह की विधियों का प्रयोग किया जाता है। इसके माध्यम से व्यावसायिक निर्देशन तथा चयन किया जाता है–

1. आवेदन रिक्त पत्र (Application Blank)
2. साक्षात्कार (Interview)
3. परीक्षण (Test)

1. आवेदन रिक्त पद (Application Blank) : इस विधि के द्वारा किसी विशेष पद (कार्य) पर नियुक्ति के लिए इच्छुक व्यक्ति के विषय में जानकारी प्राप्त करने के लिए तैयार किए गए विशेष प्रकार के प्रपत्र को "आवेदन रिक्त पत्र" कहा जाता है। इससे सूचना प्राप्त करने के लिए विभिन्न प्रश्नों को तैयार कर व्यक्तियों की विशेष जानकारी के लिए नाम, पता, उम्र, शिक्षा, अनुभव, रुचियाँ आदि सम्बन्धित जानकारी प्राप्त की जाती है।

आवेदन रिक्त पत्र बहुत ही आवश्यक एवं उपयोगी है, अगर उसके साथ कुछ सावधानियाँ रखी जायँ। इससे व्यक्ति की लिखावट, हिज्जे लिखने की गति आदि का पता चल जाता है। कभी-कभी प्रपत्र के साथ फोटो भी माँगा जाता है ताकि व्यक्ति के व्यक्तित्व को उसके चेहरे से भी जान लिया जाय। Moore ने आवेदन रिक्त पद के लिए एक रूप रेखा तैयार की है जिसमें आवश्यक बातें निम्नलिखित हैं–

(i) पत्र तैयार करते समय उन सभी प्रश्नों का संग्रह करना चाहिए जो व्यक्ति के विषय में पूर्ण जानकारी के लिए आवश्यक है।

(ii) जिससे व्यवसाय या कार्य की पूरी जानकारी प्राप्त की जा सकें।

(iii) विभिन्न प्रश्नों को उपशीर्षकों में विभाजित कर लेना चाहिए ताकि अंत तक अभिरुचि बनी रहे।

(iv) भाषा सरल व ग्राह्य होनी चाहिए।

(v) केवल आवश्यक प्रश्नों का ही समावेश होना चाहिए, अनावश्यक प्रश्नों का नहीं।

गुण (Merits)

1. इसके माध्यम से व्यक्ति के विभिन्न पक्षों की जानकारी मिल जाती है।
2. आवेदक की योग्यताओं का अनुमान लगाया जा सकता है।
3. यह चयन की पहली तैयारी है।
4. व्यक्ति की पारिवारिक विशेषताओं की जानकारी मिल जाती है।
5. आवेदक प्रपत्र को स्वयं भरता है, इसलिए उसकी लिखावट सम्बन्धी कमियों को समझा जा सकता है।
6. प्राप्त सूचनाओं के अनुसार यह भी अनुमान लगाया जा सकता है कि वह इस पद पर समायोजित हो सकता है अथवा नहीं।

दोष (Demerits)

1. व्यक्ति अपनी योग्यता तथा उपलब्धियों को बढ़ा-चढ़ा कर लिखता है जिससे वास्तविक योग्यता

का अनुमान लगाना कठिन है।

2. पूर्वाग्रह एवं पक्षपात से परिपूर्ण है।

3. फोटो के माध्यम से भी पूर्व धारणा बना ली जाती है।

4. कुछ वैज्ञानिकों का मानना है कि इससे कर्मचारी के विश्लेषण में सहायता नहीं मिलती है।

6.2.5 साक्षात्कार एवं परीक्षण (Interview and Test)

गुण एवं दोष (Merits & limitations)

साक्षात्कार (Interview)

साक्षात्कार एक बहुत पुरानी तथा बहुत लोकप्रिय विधि है जिसके द्वारा तथ्यों का संग्रह किया जाता है जो व्यावसायिक चुनाव में सहायता प्रदान करती है। अन्य सूचनाओं के अलावा व्यक्ति के बारे में सम्पूर्ण व्यक्तित्व का पता चलता है। Blum & Naylor (1968) ने बताया कि साक्षात्कार में निम्नलिखित उद्देश्य का होना बहुत जरूरी है –

1. प्रार्थी का चयन, पदोन्नति या पदस्थापना के लिए मूल्यांकन किया जाता है जिसे "Selection and Placement" साक्षात्कार कहा जाता है।

2. अगर साक्षात्कार का उद्देश्य अभिवृत्ति को जानना होता है तो उस साक्षात्कार को "attitude interview" कहा जाता है।

3. अगर साक्षात्कार का उद्देश्य कर्मचारियों की समस्याओं को दूर करने के लिए किया जाता है तो उसे Counselling interview कहा जाता है।

4. विभिन्न परिस्थितियों में व्यक्ति की क्षमता का मूल्यांकन करनेवाले साक्षात्कार को "assessment or stress interview" कहते हैं। यहाँ जानबूझ कर व्यक्ति के लिए चिंताजनक स्थिति उत्पन्न की जाती है।

यंग (Young) के अनुसार "साक्षात्कार एक ऐसी संगठित विधि है जिसमें एक व्यक्ति दूसरे के जीवन में काल्पनिक रूप से प्रवेश करता है"। "Interview is an organised method in which a person enters into the life of another person through imagination".

इन परिभाषाओं से यह पता चलता है कि साक्षात्कार का उद्देश्य साक्षात्कर्त्ता से कुछ तथ्यों का पता लगाना है जो व्यक्ति से आमने-सामने होकर ही किया जाता है। यह विधि व्यक्ति के व्यक्तिगत जीवन के अलावा सामाजिक जीवन के पहलुओं का पता लगाता है।

गुण (Merits)

1. यह बहुत प्रचलित विधि है जिसके द्वारा व्यक्ति की आंतरिक भावनाओं, अभिरुचियों तथा महत्वाकांक्षाओं का पता लगाना है।

2. प्रार्थी से सम्बन्धित सभी तथ्यों को जाना जाता है।

3. इससे कर्मचारी का विश्लेषण होता है तथा उसके हावभाव को भी जाना जाता है।

4. व्यक्ति के पूर्व (इतिहास) अनुभवों को भी जाना जा सकता है।

5. साक्षात्कार के द्वारा आवेदन पत्र में दी गई सूचनाओं का पता लगाया जा सकता है।

अवगुण (Demerits)

1. इसकी विश्वसनीयता तथा वैधता का प्रमाण नहीं मिलता है।

2. प्राप्त तथ्यों की उपयुक्तता साक्षात्कर्त्ता के व्यक्तित्व पर तथा प्रशिक्षण पर निर्भर करता है।

3. अगर साक्षात्कर्त्ता व्यक्ति से सम्बन्धित कई प्रकार की सूचनाएँ प्राप्त करना चाहता है तो साक्षात्कार संगठित नहीं होना चाहिए।

4. कुछ लोग साक्षात्कार के समय झेंपते हैं।

5. साक्षात्कार में पूर्वधारणा, पूर्वाग्रह, पक्षपात आदि का प्रभाव पड़ता है। साक्षात्कार पर पूर्ण रूप से आश्रित न होकर उसे किसी अन्य विधि के साथ जैसे–Case study आदि के साथ मिलाकर प्रयोग किया जाय तो यह ज्यादा लाभदायक होगा।

परीक्षण (Tests)

व्यावसायिक चयन में कई प्रकार के परीक्षणों का उपयोग होता है। इसमें प्रयोग में आनेवाले कई प्रकार के परीक्षण होते हैं। इसको कई मनोवैज्ञानिकों ने भिन्न-भिन्न तरीके से परिभाषित किया है।

Corntracts के अनुसार, "एक परीक्षण दो या दो से अधिक व्यक्तियों के व्यवहार की तुलना करने हेतु व्यवस्थापित पद्धति है"। **"A test is a systematic procedure for comparing the behaviour of two or more persons".** किसी भी व्यवसाय या उद्योग में सबसे ज्यादा प्रयोग में आनेवाले परीक्षण बुद्धि परीक्षण, व्यक्तित्व परीक्षण, अभिरुचि परीक्षण, दृष्टि जाँच, यांत्रिक परीक्षण तथा शाब्दिक परीक्षण आदि हैं। कुछ परीक्षण शाब्दिक तथा कुछ अशाब्दिक होते हैं तथा कुछ व्यक्तिगत और कुछ सामूहिक परीक्षण होते हैं। किसी उद्योग में प्रयोग में आनेवाले दो प्रकार के परीक्षण होते हैं–

1. व्यापार परीक्षण **(Trade test)**

2. मनोवैज्ञानिक परीक्षण **(Psychological test)** : व्यापार परीक्षण का प्रयोग उसी समय होता है जब एक खास कार्य के लिए बहाली करनी हो, जैसे–टाइपिस्ट की बहाली। इसमें टाइपिंग स्पीड, डिक्टेशन, समय गति आदि का ज्ञान प्राप्त होता है।

मनोवैज्ञानिक परीक्षण मुख्य रूप से व्यक्ति की भिन्नता **(individual difference)** को जानने के लिए किया जाता है। इसमें उद्योग में व्यक्ति एक-दूसरे से कितना भिन्न है यह जानने का प्रयास किया जाता है। इसमें प्रयुक्त होने वाले परीक्षण इस प्रकार हैं–

(i) अभिवृत्ति एवं प्राप्ति परीक्षण (Aptitude & Achievement) : व्यक्ति की योग्यताओं को मापने के लिए अभिवृत्ति परीक्षण का उपयोग किया जाता है जबकि प्राप्ति परीक्षण व्यक्ति की किसी विशेष क्षेत्र में उपलब्धियों को जाँचने के लिए किया जाता है। यह पहले से सीखा हुआ होता है।

(ii) बुद्धि परीक्षण (Intelligence test) : यह व्यक्ति की मानसिक क्षमता का मापन करता है, सीखने की क्षमता का पता चलता है तथा अलग-अलग योग्यता का मापन करता है।

(iii) रुचि परीक्षण (Interest test) : यह जानने की कोशिश की जाती है कि किस व्यावसायिक क्षेत्र में रुचि है।

(iv) सामान्य योग्यता परीक्षण (General ability test) : इसमें कई अलग-अलग परीक्षण हैं जो अलग-अलग योग्यता को मापते हैं। जैसे–मैकेनिकल एबिलीटी टेस्ट, मोटर कोर्डीनेशन टेस्ट, पेपर फार्म बोर्ड टेस्ट, फिंगर डेक्सटरीटि टेस्ट, नट एवं बोल्ट टेस्ट, आर्डीटरी टेस्ट,

परसनालीटि टेस्ट आदि।

(v) स्वभाव एवं चरित्र परीक्षण (Temperament & Character test) : इसमें व्यक्तित्व के कुछ शीलगुणों का परीक्षण होता है। जैसे–ईमानदारी, समय पाबंदी इत्यादि।

(vi) क्रियात्मकता (Creativity) : प्रबन्धक वैज्ञानिक इत्यादि का चुनाव करना होता है तो इस परीक्षण का प्रयोग किया जाता है।

(vii) निर्णय परीक्षण (Judgement test) : किसी समस्या का समाधान करने के लिए इस परीक्षण का उपयोग किया जाता है।

(viii)डेक्सटेरिटी टेस्ट (Dexterity test) : यह परीक्षण व्यक्ति के विभिन्न अंगों के समायोजन को बताता है। यह दुर्घटना प्रवणता (accident proneness) के बारे में बताता है।

(ix) प्रक्षेपण परीक्षण (Projective test) : इस परीक्षण में व्यक्तित्व की विशेषताओं को अस्पष्ट चित्रों के माध्यम से जाना जाता है।

गुण (Merits)

1. परीक्षण की विश्वसनीयता अधिक है क्योंकि परीक्षण वस्तुनिष्ठ (Objective) तथा मानकीकृत (Standerdised) है।
2. इसकी वैधता भी अधिक होती है क्योंकि एक खास उद्देश्य तथा क्षेत्र के लिए ही बनाई जाती है।
3. इसका क्षेत्र व्यापक होता है। यह भिन्न-भिन्न प्रकार की विशेषताओं को मापने के लिए किया जाता है।
4. इससे हम उच्च स्तर की भविष्यवाणी (Prediction) कर सकते हैं।
5. इससे दो या दो से अधिक व्यक्तियों के लिए तुलना भी अच्छी तरह से की जा सकती है।
6. इससे मूल्यांकन भी अच्छी तरह किया जा सकता है।
7. यह बहुत मितव्ययी (economical) है।
8. परीक्षक किसी भी परिस्थिति में प्रयुक्त होने लायक है।

अवगुण (Demerits) :

इस परीक्षण का सबसे बड़ा दुर्गुण यह है कि अगर इसे सही ढंग से प्रयोग में नहीं लाया गया तो पक्षपात (bias) की सम्भावना रहती है।

6.2.6 मूल्यांकन (Evaluation)

व्यावसायिक चयन, व्यावसायिक निर्देशन तथा कार्य विश्लेषण में साक्षात्कार आदि प्रविधियों के साथ-साथ मनोवैज्ञानिक परीक्षणों का उपयोग करना आवश्यक होता है। ये दोनों एक-दूसरे के पूरक होते हैं।

6.2.7 निष्कर्ष (Conclusion)

उपर्युक्त विवेचन का निम्नलिखित तथ्यों के आधार पर निष्कर्ष निकाल सकते हैं। व्यावसायिक चुनाव किसी भी व्यवसाय या उद्योग का एक आवश्यक हिस्सा है। व्यावसायिक चुनाव व व्यावसायिक

निर्देशन समानता रखते हुए भी बहुत भिन्न हैं। चुनाव के क्षेत्र सीमित हैं तथा यह निर्देशन के बाद आता है। चुनाव व्यावसायिक क्षेत्र के लिए है जबकि निर्देशन व्यक्ति को दिया जाता है। व्यावसायिक चुनाव के लिए कुछ नए तथा कुछ पुराने विधियों को प्रयोग में लाया जाता है।

इसके बाद कार्य विश्लेषण की पूर्ण व्याख्या की गई। इसमें अर्थ, उपयोगिताएँ तथा विधियों का भी उल्लेख किया गया। विधियों में प्रयुक्त होनेवाली विधि आवेदन रिक्त पत्र, साक्षात्कार तथा मनोवैज्ञानिक परीक्षण के साथ ही सबों के गुण-दोषों की चर्चा की गई।

6.3. सारांश (Summary)

संक्षेप में पूरे विवरण को इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है –

1. व्यावसायिक चुनाव क्या है? यह क्यों आवश्यक है तथा चुनाव के लिए किन-किन विधियों का सहारा लिया जाता है?
2. उचित चुनाव होने पर व्यक्ति में कार्य संतोष (Job satisfaction) तथा उत्पादकता (Productivity) दोनों में वृद्धि होती है।
3. व्यावसायिक निर्देशन में व्यक्ति को निर्देशन दिया जाता है–एक खास प्रकार के चुनाव के लिए तथा निर्देशन चुनाव के पहले दिया जाता है।
4. कार्य-विश्लेषण के तथ्यों को समझा गया। उसका स्वरूप, उपयोगिताएँ तथा विधियों की विशद व्याख्या की गई है।
5. कर्मचारी का विश्लेषण कैसे किया जाता है, जैसे आवेदन रिक्त पत्र, परीक्षण तथा साक्षात्कार के जरिए किया जाता है।
6. अंत में आवेदन रिक्त पत्र, साक्षात्कार तथा परीक्षण के गुण-दोषों की विवेचना की गई है।

6.4. इस पाठ में प्रयुक्त मुख्य शब्द (Key words used in this lesson)

(i) व्यावसायिक चुनाव (ii) व्यावसायिक निर्देशन (iii) शारीरिक गुण के आधार पर (iv) लिखावट का विज्ञान (v) उपयुक्तता (vi) प्रश्नावली (vii) कार्य सूचिका (viii) कार्य विश्लेषण (ix) तकनीकी सम्मेलन (x) आवेदन रिक्त पत्र (xi) साक्षात्कार (xii) मनोवैज्ञानिक परीक्षण (xiii) क्रिया विश्लेषण।

6.5. अभ्यास के प्रश्न (Questions for exercise)

(a) वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. इनमें से कौन कार्य विश्लेषण की विधि नहीं है?

   (i) साक्षात्कार (ii) परीक्षण

   (iii) व्यक्ति इतिहास विधि (iv) आवेदन रिक्त पत्र

   उत्तर—(iii)

2. साक्षात्कार का सबसे बड़ा दोष क्या है?

   (i) समय का अधिक लगना (iii) अधिक श्रम करना

   (iii) आत्मनिष्ठ होना (iv) अधिक खर्चीला होना

   उत्तर—(iii)

(b) लघु उत्तरीय प्रश्न

1. व्यावसायिक चुनाव क्या है? वर्णन करें।

   उत्तर के लिए 6.2.1 देखें।

2. व्यावसायिक निर्देशन तथा चुनाव में क्या अन्तर है?

   उत्तर के लिए देखें 6.2.1 तथा 6.2.2 ।

(c) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. कार्य विश्लेषण क्या है? इसकी कौन-कौन सी विधियाँ हैं?
2. कर्मचारी विश्लेषण में साक्षात्कार का क्या महत्व है?
3. मनोवैज्ञानिक परीक्षण क्या है? इसके गुण-दोषों की विवेचना करें।
4. कर्मचारी चयन की विधि के रूप में साक्षात्कार का मूल्यांकन करें।

6.6. प्रस्तावित पुस्तकें (Suggested Readings)

1. आधुनिक औद्योगिक एवं संगठनात्मक मनोविज्ञान—सुलेमान एवं चौधरी
2. औद्योगिक संगठनात्मक मनोविज्ञान—डी० सी० कोचर
3. Industrial Psychology—Viteles.

★

नैदानिक मनोविज्ञान का स्वरूप

पाठ की संरचना

7.0 उद्देश्य
7.1 परिचय
7.2 मुख्य विचार
7.2.1 नैदानिक मनोविज्ञान की परिभाषा
7.2.2 नैदानिक मनोविज्ञान का कार्य क्षेत्र
7.2.3 नैदानिक मनोविज्ञान का उद्देश्य
7.2.4 नैदानिक मनोविज्ञान का महत्व
7.2.5 निष्कर्ष
7.3 सारांश
7.4 पाठ में प्रयुक्त प्रमुख शब्द
7.5 अभ्यास के प्रश्न
(a) वस्तुनिष्ठ प्रश्न
(b) लघु उत्तरीय प्रश्न
(c) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न
7.6 प्रस्तावित पुस्तकें

7.0 उद्देश्य (Objective)

इस पाठ का मुख्य उद्देश्य नैदानिक मनोविज्ञान के स्वरूप को पूरी तरह से पाठकों को समझना है। पूरी तरह से इसके स्वरूप को समझने के लिए हमें इससे सम्बन्धित सारे तथ्यों को पूरी तरह समझना है, जिसमें उसकी परिभाषा, उसकी ऐतिहासिक रूप रेखा, नैदानिक मनोविज्ञान तथा असामान्य मनोविज्ञान में क्या फर्क है तथा नैदानिक मनोविज्ञान की वर्त्तमान स्थिति क्या है इत्यादि।

पूरे पाठ को ठीक से समझने के लिए इसका सारांश प्रस्तुत किया जाएगा। पाठ में प्रयुक्त प्रमुख शब्दों का विवरण प्रस्तुत किया जाएगा तथा पूरे पाठ को छात्रों ने ठीक तरह से समझा या नहीं यह जाँचने के लिए विभिन्न प्रकार के प्रश्न जैसे–वस्तुनिष्ठ, लघु उत्तरीय तथा दीर्घ उत्तरीय पूछे जाएँगे। और अन्त में पाठ के बारे में वृहत् जानकारी के लिए कुछ किताबें प्रस्तावित की गई हैं ताकि पाठक उसके बारे में ठीक प्रकार से जानकारी मिल जाय।

7.1 परिचय (Introduction)

मनोविज्ञान को शुरू से ही एक महत्वपूर्ण विषय समझा गया है। नैदानिक मनोविज्ञान मनोविज्ञान की एक हाल की (recent) शाखा है। इसकी शुरूआत एक ग्रीक शब्द से हुई है। 'Clinical' जिसका शाब्दिक अर्थ है विस्तर पर पड़े रहना तथा मनोविज्ञान का अर्थ है मन का अध्ययन, परन्तु शाब्दिक अर्थ भ्रामक है। नैदानिक मनोविज्ञान दोनों प्रकार का मनोविज्ञान है। यह सैद्धान्तिक तथा प्रयुक्त (applied) शाखा है। इससे यह पता चलता है कि मनोविज्ञान के क्षेत्र में धीरे-धीरे परिवर्त्तन हुए हैं। इसके साथ-ही-साथ मनोविज्ञान के ज्ञान में धीरे-धीरे बढ़ोतरी होती गयी। इसका क्षेत्र बढ़ता गया। यह शोध, ट्रेनिंग (प्रशिक्षण) तथा चिकित्सा के क्षेत्र में फैला।

7.2. मुख्य विचार

7.2.1 नैदानिक मनोविज्ञान का स्वरूप (Nature of Clinical Psychology)

किसी भी विज्ञान की शुरूआत सामान्यतः परिभाषा तथा शाब्दिक अर्थ से ही होती है। ऐसा समझा जाता है कि यह मनोविज्ञान की नई शाखा है तथा ''क्लीनिकल'' शब्द ग्रीक भाषा से उत्पन्न हुई है जिसका अर्थ है विस्तर पर पड़े रहना। इस प्रकार शाब्दिक अर्थ के अनुसार नैदानिक मनोविज्ञान मनोविज्ञान की वह शाखा है जो उन व्यक्तियों का अध्ययन करती है जो विस्तर पर पड़े रहते हैं। परन्तु शाब्दिक अर्थ से नैदानिक मनोविज्ञान का वास्तव में जो स्वरूप है उस पर प्रकाश नहीं पड़ता है। वस्तुतः नैदानिक मनोविज्ञान व्यक्ति से सम्बन्धित सभी समस्याओं मुख्य रूप से अभियोजन की समस्याओं का अध्ययन करता है। यह व्यक्ति को अभियोजन कायम करने में मदद करती है, उनकी समस्याओं को समझ कर उनके अच्छे के लिए कार्य करता है। कहने का तात्पर्य यह है कि यह सामान्य व्यक्ति तथा किसी एक व्यक्ति के लिए कार्य करता है। वुन्ट (Wundt) का कहना है, ''नैदानिक मनोविज्ञान सामान्य वयस्क, मानव मन के अध्ययन तक ही सीमित नहीं है।'' चिकित्सा मनोविज्ञान की व्याख्या करते हुए गारफील्ड ने कहा कि, ''चिकित्सा मनोविज्ञान की एक शाखा है जिसका सम्बन्ध व्यक्तित्व के समायोजन तथा उसमें परिवर्त्तन की समस्याओं से है।''

Louilit (1939) ने चिकित्सा मनोविज्ञान के स्वरूप पर प्रकाश डालते हुए बताया कि उसकी परिभाषा को निम्नलिखित चार भागों में बाँटा गया है–

(i) ऐसी परिभाषा जिसका सम्बन्ध मानसिक परीक्षण से है।

(ii) कुछ ऐसी परिभाषाएँ जिनका सम्बन्ध असामान्य व्यक्तियों से है।

(iii) ऐसी परिभाषा जिसका सम्बन्ध केवल चिकित्सा से है।

(iv) विधि (Method) से सम्बन्धित परिभाषाएँ।

(i) पहली श्रेणी की परिभाषा का सम्बन्ध मानसिक परीक्षण से है। सबसे पहले शिकागो बाल संस्थान द्वारा किया गया है। उसके अनुसार, ''चिकित्सा मनोविज्ञान का सम्बन्ध बच्चों की जन्मजात क्षमता, शैक्षिक उपलब्धि तथा विशेष रुचि के मूल्यांकन से है''।

"Clinical psychology is concerned with the evaluation of child's inborn abilities, educational achievements, and special aptitudes."

(ii) दूसरे श्रेणी की परिभाषा का सम्बन्ध असामान्य व्यक्तियों से है और मुख्य रूप से यह कुअभियोजन (Mal adjustment) से है। गोडार्ड (Goddard, 1910) ने बताया, ''नैदानिक मनोविज्ञान को मानसिक रूप से असामान्य एवं अवसामान्य व्यक्तियों के व्यक्तिगत परीक्षण का विज्ञान है''।

"Child Psychology is personal examination of mentally abnormal & subnormal persons".

(iii) तीसरे प्रकार की परिभाषा का सम्बन्ध चिकित्सा से है और इसमें शोध, ट्रेनिंग तथा शिक्षण का भी हाथ है जिसके कारण ज्ञान में वृद्धि हुई तथा उससे खिन्न व्यक्ति (distress person) की चिकित्सा हो सके।

(iv) चौथी श्रेणी की परिभाषा से नैदानिक मनोविज्ञान के स्वरूप पर पूर्ण रूप से प्रकाश पड़ता है। पहले से अबतक नैदानिक मनोविज्ञान के स्वरूप तथा क्षेत्र में बहुत सारे परिवर्त्तन आए हैं फिर भी यह बहुत कठिन कार्य है कि नैदानिक मनोविज्ञान को एक सही परिभाषा में कैद किया जाय।

''अमेरिकन साइकोलोजिक एसोसिएसन'' ने अपनी एक रिपोर्ट में कहा है कि, ''चिकित्सा मनोविज्ञान व्यावहारिक विज्ञान की शाखा है जो मापन (Measurement), विश्लेषण तथा निरीक्षण विधियों (observation method) के आधार पर व्यक्तियों के व्यवहार की क्षमताओं तथा विशेषताओं की व्याख्या करने का प्रयास करता है तथा जो इन अध्ययनों के परिणामों की शारीरिक जाँच एवं समायोजन के लिए सलाह देता है तथा उपाय बताता है''।

उपर्युक्त परिभाषा का अगर विश्लेषण करें तो निम्नलिखित बातें सामने आती हैं–

1. यह मनोविज्ञान की व्यावहारिक (applied) शाखा है।
2. इससे व्यक्तित्व का मापन होता है।
3. व्यवहार के कारणों का पता लगता है।
4. कुसमायोजन को समझना; तथा
5. व्यक्ति की सारी समस्याओं को जो दूर करने का प्रयास करते हैं।

इस परिभाषा का सर्मथन ''भारतीय एसोसिएसन ने नैदानिक मनोविज्ञान तथा Dictonary of Occupational Titles (1960) ने भी समर्थन किया है।

7.2.2 संक्षिप्त इतिहास (Brief Historical Review)

नैदानिक मनोविज्ञान का इतिहास 99 वर्ष पुराना है। मनोविज्ञान एक स्वतंत्र विज्ञान के रूप में 1860 में उभर कर सामने आया। पहली मनोवैज्ञानिक प्रयोगशाला की स्थापना वुन्ट लोइपजिक ने 1879 में की। इसके सत्रह वर्षों के बाद विटेमर ने 1896 में अमेरिका में पहली नैदानिक मनोविज्ञान की प्रयोगशाला की स्थापना की।

नैदानिक मनोविज्ञान के विकास में कई मनोवैज्ञानिकों ने अपना योगदान दिया। उन्हें पूर्ववर्ती मनोवैज्ञानिक कहते हैं। वर्नस्टेन तथा निटजेल (Bernstein & Nitezel) 1987, 1991 ने नैदानिक मनोविज्ञान के इतिहास को दो भागों में बाँटा है–

1. नैदानिक मनोविज्ञान के पूर्ववर्त्ती कारक (Antecedents of Clinical Psychology)
2. नैदानिक मनोविज्ञान का विकास (Development of Clinical Psychology)

1. नैदानिक मनोविज्ञान के पूर्ववर्ती कारक : ऐसा समझा जाता है कि पूर्ववर्ती कारक नैदानिक मनोविज्ञान के विकास के निर्धारक हैं। वाटसन (1953) ने पूर्ववर्त्ती कारकों को तीन छोटे-छोटे समूहों में बाँटा है–

(i) शोध परम्परा (Rerearch tradition)

(ii) व्यक्तिगत भिन्नता का सिद्धान्त(Doctrine of individual difference)

(iii) शारीरिक व्याधि की धारणा (Concept of behaviour disorder)

(i) शोध परम्परा को प्रायः विकास के लिए मील का पत्थर (Mile stone) कहा जाता है। इसकी शुरूआत मन और शरीर (Mind-body), दार्शनिकों से, शरीर शास्त्रियों तक मुख्य रूप से इन्होंने संवेदना (sensation) का अध्ययन किया, जिसमें वेबर (1795-1878), फेकनर (1801-1887), जे० मुलर (1801-1858) तथा हेल्महोल्ज, (1821-1894) आदि प्रमुख हैं।

इसमें सबसे अधिक शोहरत (नाम) वुन्ट (1852-1920) को मिली क्योंकि इन्होंने जीवविज्ञान तथा भौतिकशास्त्र तथा प्राकृतिक विज्ञान के अध्ययन के लिए पहली प्रयोगशाला लाइपलिक में 1879 में स्थापित की। अध्ययन का माध्यम प्रयोगात्मक विधि थी। इसके बाद विटमर ने 1896 में एक अन्य प्रयोगशाला की स्थापना की जिससे नैदानिक मनोविज्ञान को एक अलग शाखा के रूप में पहचान मिली। बर्नस्टीन तथा निटजेल (1987) ने नैदानिक मनोविज्ञान में शोध परम्परा के विकास के योगदान की व्याख्या इस प्रकार की, ''संक्षेप में प्रयोगात्मक मनोविज्ञान की शोध परम्परा एक सबल निर्धारक रही है।''

(ii) व्यक्तिगत भिन्नता का सिद्धान्त (Doctrine of Individual Difference) : इस सिद्धान्त को नैदानिक मनोविज्ञान का महत्वपूर्ण पूर्ववर्तीकारक माना जाता है। इसकी शुरूआत प्लेटो के 'रिपब्लिक' से की जाती है तथा इसको मापने के लिए उस समय दो स्रोत थे—ज्योतिष (astrology) तथा शरीर रचना (anatomy) ।

डार्विन (1859) ने अपनी पुस्तक "The Origin of Spices" में ऐसे महत्वपूर्ण तथ्यों का उल्लेख किया जिससे व्यक्तिगत भिन्नता के विकास में सहायता मिली।

(i) अन्तः व्यक्तिगत विशेषताएँ (Intra individual characteristics)

(ii) अन्तर व्यक्तिगत विशेषताएँ (Inter-individual characteristics)

फ्रांसिस गाल्टन (1869) ने अपनी पुस्तक में "Hereditary Crenius" इस तथ्य का उल्लेख किया कि बुद्धि (प्रतिभा) जन्मजात होती है। इन्होंने सर्वप्रथम बुद्धि को मापने के लिए परीक्षणों का निर्माण किया तथा बताया कि शारीरिक भिन्नता की तरह लोगों में मानसिक भिन्नता भी पाई जाती है। सन् 1883 में इन्होंने "Inquaries into human faculty and its development" में किया। गाल्टन द्वारा विकसित परीक्षण से व्यक्ति मनोविज्ञान (Individual Psychology) का विकास सम्भव हुआ। इन्होंने लन्दन में एक प्रयोगशाला की स्थापना की, जहाँ शारीरिक, मानसिक विशेषताओं तथा विभिन्नताओं का मापन किया जाता था।

इस क्षेत्र में जे० एम० कैटल (1860-1944) का भी योगदान बहुत महत्वपूर्ण है। इन्होंने सर्वप्रथम मानसिक परीक्षण (Mental testing) के क्षेत्र में योगदान दिया तथा अमेरिका में एक मनोवैज्ञानिक प्रयोगशाला की स्थापना की। सन् (1890) में इन्होंने सर्वप्रथम मानसिक परीक्षण शब्द (Mental testing) का इस्तेमाल किया। इसका प्रयोग इन्होंने व्यक्तियों के चयन (selection), रोगों के संकेत (indicator) के लिए किया।

इस परम्परा में दूसरा महत्वपूर्ण नाम क्रेयलिन का (1895) तथा अल्फ्रेड विने (1905) का है। बिने को इस युग का महत्वपूर्ण वैज्ञानिक माना गया क्योंकि इन्होंने फ्रांस में मानसिक मन्दन (Mental retardation) को मानसिक परीक्षण से मापन किया।

(iii) व्यवहार शारीरिक विकृति की धारणा : हिप्पोक्रेट्स से पहले व्यवहार का अध्ययन करना अलौकिक शक्तियों पर आधारित था। हिप्पोक्रेट ही ऐसे दार्शनिक थे जिन्होंने व्यवहार के अध्ययन को

आधार दिया। इन्होंने बताया कि बीमारी का कारण दैविक शक्तियाँ नहीं वरन् वास्तविक कारण है जो रक्त में पाए जाने वाले चार द्रव्यों के कारण होती है, जिसके असमान वितरण ही रोग के लिए जिम्मेवार हैं। ये निम्नलिखित हैं–

(i) रक्त पित्त (Blood bile)

(ii) काला पित्त (Black bile)

(iii) पीला पित्त (Yellow bile)

(iv) कफ (Cough)

मध्यकाल तक पिशाचवाद का बोलबाला था। 18वीं शताब्दी के अन्त तक यह मानवीय दृष्टिकोण में बदल गया जिसमें पिनेल (Pinel) का महत्वपूर्ण योगदान है। मानसिक बीमारियों की चिकित्सा मेस्मर ने "मेस्मिरिज्य" के जरिए की जिससे उनको काफी नाम और यश मिला। 19वीं शताब्दी में जेम्स ब्रेड ने सम्मोहन (Hypnosis) के जरिए मानसिक रोगों का इलाज किया, जिससे चिकित्सा के क्षेत्र में क्रांति आई, जिसमें बर्नहाइम, जेने तथा शार्को ने भी साथ दिया।

सबसे महत्वपूर्ण योगदान इस क्षेत्र में फ्रायड के द्वारा किया गया (1856-1939) । इन्होंने एक नई प्रविधि का इलाज किया और बताया कि मानसिक रोगों का कारण शारीरिक नहीं, बल्कि मानसिक होता है। इसका मुख्य कारण अचेतन मस्तिष्क की दमित इच्छाएँ हैं जिसमें मुख्य रूप से यौन सम्बन्ध विचार होते हैं।

(ii) नैदानिक मनोविज्ञान का विकास (Development of clinical psychology) (1896-1917)– नैदानिक मनोविज्ञान का विकास वास्तव में लाइटनर विटमर के साथ शुरू हुआ है (1867-1956), जिन्होंने सबसे पहली मनोवैज्ञानिक निदान गृह (clinic) को (पेनसिलवानिया, अमेरिका) में स्थापित किया। इसमें निम्नलिखित तथ्यों का मापन किया–

(a) बच्चों और विद्यार्थियों की शिक्षण अयोग्यता को मापने के लिए किया गया।

(b) कई अन्य व्यवसायियों (professionals) का सहारा लिया यानि टीम वर्क पर ध्यान दिया।

(c) प्रारम्भिक निरूपण से बाद की समस्याओं का समाधान किया जा सकता है।

हालांकि विटमर को अन्य मनोवैज्ञानिकों से सहायता नहीं मिली, फिर भी यह कार्य करते गए। इन्होंने 1904-1905 एक विशेष पाठ्यक्रम की शुरूआत की जिसमें–

(i) मानसिक दुर्बल बच्चों के प्रशिक्षण के लिए एक बाल निदान गृह की स्थापना, तथा

(ii) एक आवासीय स्कूल की स्थापना की।

इस क्षेत्र के अन्य महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक जिन्होंने इस क्षेत्र को सहयोग दिया, उसमें–

(a) बिने साइमन परीक्षण (Binet-Simon test)

(b) वयस्क मूल्यांकन (Adult assessment)

(c) फ्रायड का दृष्टिकोण (Freuds approach)

(a) बिने-साइमन परीक्षण को बुद्धि मापन के लिए इस क्षेत्र में बहुत लोकप्रियता मिली। इस क्षेत्र में यह शुरूआती कदम था जिसमें मानसिक रूप से मंद बच्चों की पहचान के लिए की गई। इस परीक्षण के कई संशोधन क्रमशः 1908, 1916, 1939, 1960 तथा 1980 हुए। यह बहुत ही लोकप्रिय परीक्षण साबित हुआ और इसे आज भी निदान के लिए तथा बुद्धि परीक्षण के लिए किया जाता है।

(b) वयस्क मूल्यांकन विटमर की सबसे बड़ी कमजोरी साबित हुई क्योंकि इस पर इन्होंने ध्यान नहीं दिया तथा इस पर ध्यान देना बहुत देर से (1907) में विभिन्न प्रकार के निदान के लिए किया (diffrential diagnosis) ।

फ्रायड का योगदान इस क्षेत्र में बहुत महत्वपूर्ण साबित हुआ। इन्होंने शारीरिक दृष्टिकोण का विरोध किया और मानसिक कारण को स्वीकारा और बताया कि मानसिक रोग अचेतन मन की दमित इच्छाओं के कारण होता है। अचेतन मस्तिष्क व्यक्ति के व्यक्तित्व को निर्धारित करता है और मानसिक रोगों की चिकित्सा मन-चिकित्सा (Psychotherepy) से ही सम्भव है। इन्होंने बाल निर्देशन को भी महत्व दिया और एक बाल निर्देशन केन्द्र खोला जिसमें वियर्स, विलियम जेम्स, मेयर इत्यादि ने सहयोग दिया। विलियम हिली ने सबसे पहला बाल निर्देशन केन्द्र खोला (1909) और बच्चों की समस्याओं का अध्ययन किया। जी० एस० हाल (1907) भी फ्रायड से बहुत प्रभावित हुआ। इसमें सन् (1910-1917) में मनोवैज्ञानिकों को ट्रेनिंग देने की व्यवस्था की गई। इसकी चर्चा अमेरिकन जनरल में की गई। सन् 1917 में (APA) अमेरिकन साइकोलॉजिक एसोसिएसन की स्थापना, (AACP) तथा अमेरिकन एसोसिएशन ऑफ क्लीनिकल साइकोलोजी की भी स्थापना हुई।

द्वितीय विश्वयुद्ध के चलते भी कई प्रकार के परीक्षणों का विकास हुआ, क्योंकि सिपाहियों में कई प्रकार के मानसिक रोगों के लक्षण उत्पन्न हो गए थे। इनमें प्रमुख–

(i) आर्मी अल्फा टेस्ट

(ii) आर्मी बीटा टेस्ट

इसी प्रकार बुडवर्थ ने मनः स्नायु विकृति आविष्कारिका बनाई जिसे 'परसनल डाटा शीट' कहा गया। इसी प्रकार व्यक्तित्व को मापने के लिए भी कई परीक्षण हैं जैसे MMPI, WAIS, TAT तथा RT।

इसी प्रकार पिनेल (1745-1826) ने मानसिक रोगों की चिकित्सा के लिए मानवीय दृष्टिकोण अपनाया। हिप्पोक्रेट ने मानसिक रोगियों के तीन प्रकार बताए–

(i) मैनिया, मैलेकोलिया तथा फेरमिटीस

इस वर्गीकरण ने आगे शोध के लिए रास्ता खोला। इस प्रकार फ्रायड की विधि मनोविश्लेषण का विकास पर सीधा असर पड़ा। फ्रायड ने मानसिक रोगों का कारण अचेतन मन की दमित इच्छाओं को माना।

7.2.3 नैदानिक मनोविज्ञान की वर्त्तमान स्थिति (Present status of Clinical Psychology)

नैदानिक मनोविज्ञान में बड़ी तीव्र गति से परिवर्त्तन हुए हैं। इससे मनोवैज्ञानिक को पहचान और निदान में मदद मिलती है। नैदानिक मनोविज्ञान का सम्बन्ध विभिन्न प्रकार के क्षेत्रों से है जैसे–बालसुधार गृह, स्कूल, उद्योग तथा अन्य क्षेत्रों में भी है, जिसमें मनोवैज्ञानिक निम्नलिखित कार्य सम्पन्न करते हैं–

1. पहचान तथा व्यक्तित्व का मूल्यांकन (Diagnosis and personality assessment): निदान तथा पहचान ही नैदानिक मनोविज्ञान का मुख्य विषय है जो व्यक्ति की विभिन्न समस्याओं को समझता है तथा उसे दूर करने का प्रयास करता है। उनके संघर्षों (conflicts) को दूर करता है। व्यक्ति की समस्याओं को समझने का प्रयास "केस अध्ययन" की सहायता से करते हैं। व्यक्ति के कुसमायोजन को समझने का प्रयास करते तथा व्यक्तित्व के असंगठन का अध्ययन करती हैं।

इन सभी समस्याओं को दूर कर उन्हें आराम पहुँचाने का कार्य करता है, जो विभिन्न प्रकार के व्यक्तित्व परीक्षण से सम्पन्न किया जाता है।

2. चिकित्सा (Therapy) : रोगों की पहचान के बाद नैदानिक मनोवैज्ञानिक उसकी चिकित्सा विभिन्न तरीके से जैसे–पहचानने, चिकित्सा करने, उनकी तकलीफों को दूर करने का कार्य करते हैं। नैदानिक मनोविज्ञान यद्यपि एक non-medical profession है, फिर भी कई प्रकार से रोगियों की मदद करते हैं।

3. शोध (Research) : नैदानिक मनोवैज्ञानिक का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र शोध है। अस्पतालों में केस अध्ययन भी एक महत्वपूर्ण साधन है शोध के लिए–

1. CIP सेन्ट्रल इन्सटीट्यूट ऑफ साईकेट्री, कांके, राँची, महत्वपूर्ण साधन है शोध के लिए।

3. शिक्षण और प्रशिक्षण (Teaching & training) : यह भी एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है जो कि पूरे भारत में सभी विश्वविद्यालय के P.G. विभाग में उपलब्ध है, इससे विषय का पूर्ण ज्ञान प्राप्त होता है।

इस क्षेत्र में प्रशिक्षण P.G. करने के बाद दिया जाता है। इस प्रकार के कई इन्सटीट्यूट पूरे भारत में हैं। जिसमें कुछ प्रमुख इस प्रकार हैं–

1. CIP. Central Institute of Psychiatry, Kanke, Ranchi.
2. NIMH. National institute of Mental Health, Banglore.
3. Lumbini Park, Calcutta.

इस प्रकार के प्रशिक्षण अमेरिकन साइकोलॉजिकल एसोसिएसन द्वारा सम्पन्न किए जाते हैं, जैसे–drug addiction तथा नशाबन्दी के लिए।

7.2.4 नैदानिक मनोविज्ञान तथा असामान्य मनोविज्ञान में अन्तर (Difference between Clinical & Abnormal Psychology)

दोनों मनोविज्ञान की शाखाएँ हैं। अतः इसमें थोड़ी समानता एवं कई विभिन्नताएँ हैं जो निम्नलिखित हैं–

1. नैदानिक मनोविज्ञान मनोविज्ञान की व्यावहारिक शाखा है जबकि असामान्य मनोविज्ञान एक सैद्धान्तिक शाखा है।

2. दोनों शाखाओं में कार्यक्षेत्र (Scope) का अन्तर है। नैदानिक मनोविज्ञान का कार्यक्षेत्र ज्यादा विस्तृत है जबकि असामान्य मनोविज्ञान विभिन्न प्रकार की मानसिक बीमारियों के कारण एवं लक्षणों का अध्ययन करता है, जबकि नैदानिक मनोविज्ञान सामान्य पुरुष एवं बच्चों की समस्याओं का अध्ययन विभिन्न परिस्थितियों में करता है जैसे–शिक्षा, उद्योग, जेल, सुधार गृह तथा अन्य कई क्षेत्रों में।

3. दोनों शाखाओं में प्रशिक्षण को लेकर अन्तर है। चूँकि नैदानिक मनोविज्ञान का कार्यक्षेत्र वृहत है अतः एक नैदानिक मनोवैज्ञानिक को विभिन्न क्षेत्रों में प्रशिक्षण की आवश्यकता है, जबकि असामान्य मनोविज्ञान के लिए इस प्रकार के किसी प्रशिक्षण की आवश्यकता नहीं है।

4. नैदानिक मनोविज्ञान एक व्यावसायिक क्षेत्र (Professional) है। ये अपना प्राइवेट चिकित्सालय चला सकते हैं, चाहें तो घर पर भी, जबकि असामान्य मनोविज्ञान ऐसी शाखा नहीं है।

5. नैदानिक मनोविज्ञान में कारण और लक्षण को गहराई से देखा जाता है और कुसमायोजित व्यवहारों का कारण ढूँढता है। यह एक-एक व्यक्ति पर खास कर ध्यान देता है (Person in a particular), जबकि असामान्य मनोविज्ञान साधारण रूप से व्यक्ति पर ध्यान देता है।

6. नैदानिक मनोविज्ञान का उद्देश्य रोग को पहचान (diagnosis) कर उसकी चिकित्सा करना

है, जिसमें बच्चे-बड़े सभी शामिल हैं जबकि असामान्य मनोविज्ञान व्यक्ति के (an adult) व्यवहार से सम्बन्धित है।

7.2.5 निष्कर्ष (Conclusion)

इस पाठ के आधार पर हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि अभी के समय में नैदानिक मनोविज्ञान का बहुत महत्व है, क्योंकि आज के इस जटिल जीवन में दिन-प्रतिदिन नई समस्याओं का उद्भव होता है, जिनका समाधान आवश्यक है।

नैदानिक मनोविज्ञान के क्षेत्र में शोध एवं प्रशिक्षण से इसे नया अर्थ (New meaning) मिला है। इसका महत्वपूर्ण योगदान रोग की पहचान और निदान में है। यह व्यक्ति की कई प्रकार की समस्याओं का समाधान करता है।

7.3. सारांश (Summary)

इस पाठ का सारांश इन शब्दों में प्रस्तुत किया जा सकता है–

1. क्लीनकल 'Clinical' शब्द की शुरूआत ग्रीक शब्द से हुई है जिसका तात्पर्य विस्तर पर पड़े रहना है।

2. नैदानिक मनोविज्ञान सैद्धान्तिक (theoretical) तथा व्यावहारिक (applied) दोनों प्रकार का विज्ञान है।

3. नैदानिक मनोविज्ञान रोग की पहचान (diagnosis) तथा उपचार (treatment) करता है।

4. नैदानिक मनोविज्ञान के चार आधार हैं–

   (i) मानसिक परीक्षण।

   (ii) इसका सम्बन्ध असामान्य व्यक्तियों से है।

   (iii) कुछ परिभाषाओं का सम्बन्ध चिकित्सा से है।

   (iv) कुछ विधियों और नियमों पर आधारित है।

5. यह किसी व्यक्ति की व्यक्तिगत समस्याओं तथा समायोजन में मदद करता है।

6. नैदानिक मनोविज्ञान का इतिहास 99 वर्ष पुराना है।

7. विटमर ने पहले पहल नैदानिक मनोविज्ञान की प्रयोगशाला का निर्माण किया (1896)।

8. नैदानिक मनोविज्ञान की ऐतिहासिक रूपरेखा दो भागों में बँटी है–नयी-पुरानी (Modern & Ancient)।

9. पहले (पुरानी) भाग का आधार शोध, व्यक्तिगत भिन्नता तथा विभिन्न रोगों से है।

10. दूसरा भाग परीक्षण के विकास तथा फ्रायड के योगदानों पर आधारित है।

11. चिकित्सा में मानवीय दृष्टिकोण (humanitarian approach) का प्रतिपादन पिनेल (Pinel) ने किया।

12. नैदानिक मनोविज्ञान में आज की जो स्थिति है वह पहचान, निदान, शोध, शिक्षण तथा प्रशिक्षण पर आधारित है।

13. नैदानिक मनोविज्ञान व असामान्य मनोविज्ञान एक-दूसरे से निम्नलिखित पर आधारित

हैं–सिद्धान्त, शोध, कार्यक्षेत्र, प्रशिक्षण तथा प्रयुक्तता (व्यावहारिकता)।

7.4. पाठ में प्रयुक्त प्रमुख शब्द (Key words used in this lesson)

(i) नैदानिक (ii) व्यावहारिक (iii) कुसमायोजन (iv) मानसिक परीक्षण (v) चिकित्सा (vi) बाल (vii) अभिक्षमता (viii) विषाद (ix) पूर्ववर्त्ती (x) सिद्धान्त-नियम (xi) गणतंत्र (xii) वंशानुगत मेधा (xiii) व्यक्तिगत चयन (xiv) अति स्वभाविक शक्तियाँ (xv) मेस्वरवाद (xvi) सम्मोहन (xvii) पहचान (xviii) संघर्ष (xix) मनः चिकित्सा।

7.5. अभ्यास के प्रश्न (Questions for exercise)

(a) वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'क्लीनकल' शब्द का अर्थ–

(i) पहचान (diagnosis) (ii) विस्तर पर पड़े रहना

(iii) बीमार आदमी (iv) मानसिक रोग

उत्तर—(ii)

2. नैदानिक मनोविज्ञान का जनक कौन है?

(i) वुन्ट (ii) फ्रायड

(iii) विटमर (iv) डार्विन

उत्तर—(iii)

(b) लघु उत्तरीय प्रश्न

1. नैदानिक मनोविज्ञान एवं असामान्य मनोविज्ञान में अन्तर स्पष्ट करें।

उत्तर के लिए देखें 7.2.4।

2. नैदानिक मनोविज्ञान की वर्त्तमान स्थिति का वर्णन करें।

उत्तर के लिए देखें 7.2.3।

(c) दीर्घउत्तरीय प्रश्न

1. नैदानिक मनोविज्ञान की परिभाषा दें तथा इसके क्षेत्र का वर्णन करें।
2. नैदानिक मनोविज्ञान की ऐतिहासिक रूपरेखा प्रस्तुत करें।
3. नैदानिक मनोविज्ञान तथा असामान्य मनोविज्ञान में अन्तर स्पष्ट करें।

7.6. प्रस्तावित पुस्तकें (Suggested Readings)

1. कोचर—नैदानिक मनोविज्ञान
2. आर० एम० वर्मा—नैदानिक मनोविज्ञान
3. मु० सुलेमान—नैदानिक मनोविज्ञान

★

नैदानिक समस्याएँ : मनोदैहिक विकृति

पाठ की संरचना

8.0 उद्देश्य

8.1 परिचय

8.2 मुख्य विचार

- 8.2.1 मनोदैहिक विकृति का स्वरूप
- 8.2.2 अपेक्षित मनोवैज्ञानिक संस्था के अनुसार वर्गीकरण
- 8.2.3 मनोदैहिक विकृति के कारण
- 8.2.4 मनोदैहिक विकृति के सुधार
- 8.2.5 साइकोपैथिक व्यक्तित्व
- 8.2.6 कारण और उपचार
- 8.2.7 निष्कर्ष

8.3 सारांश

8.4 पाठ में प्रयुक्त प्रमुख शब्द

8.5 अभ्यास के प्रश्न

- (a) वस्तुनिष्ठ प्रश्न
- (b) लघु उत्तरीय प्रश्न
- (c) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

8.6 प्रस्तावित पुस्तकें

8.0. उद्देश्य (Objective)

इस पाठ का उद्देश्य मनोदैहिक बीमारी को अच्छी तरह पाठकों को समझाना है। ऐसा करने के लिए हमें मनोदैहिक बीमारी के सभी प्रभागों को अच्छी तरह पाठकों को समझाना है। सबसे पहले इसका स्वरूप, वर्गीकरण तथा विभिन्न प्रकारों के बारे में अच्छी तरह बतलाना है और इसके सुधार के उपायों के बारे में जानकारी देना है।

पूरे वर्णन का संक्षेपण प्रस्तुत किया जाएगा तथा पाठ में प्रयुक्त महत्वपूर्ण शब्दों की सूची प्रस्तुत की जाएगी। पाठकों ने इस पाठ को ठीक तरह से समझा या नहीं, इसकी जाँच विभिन्न प्रकार के प्रश्नों (वस्तुनिष्ठ, लघु उत्तरीय, दीर्घ उत्तरीय प्रश्न) से की जाएगी। पाठ के बारे में दीर्घ जानकारी के लिए प्रस्तावित पुस्तकों के नाम दिए जाएँगे।

8.1. परिचय (Introduction)

नैदानिक मनोविज्ञान, मनोविज्ञान की महत्वपूर्ण शाखा है। इसका प्रमुख उद्देश्य रोग का निदान व चिकित्सा है। यहाँ पर मनोदैहिक बीमारियों की विस्तार से चर्चा की जाएगी। यह दो शब्दों से 'मनो' तथा 'दैहिक' यानी इस रोग के कारण 'मन' में (Pertaining to mind) तथा उसका प्रभाव शरीर पर है। कहने का तात्पर्य यह हुआ कि इसके लक्षण शारीरिक होते हैं। इस प्रकार के कई रोग हैं जैसे–पेप्टिक अल्सर, दमा, हृदय सम्बन्धी रोग आदि।

8.2. मुख्य विचार

8.2.1 बीमारियों का स्वरूप (Nature of Psychosomatic disorder)

मनोदैहिक (Psychosomatic or Psychophysologic) रोग एक बहुत जटिल नैदानिक समस्या है। साधारणतः यह समझा जाता है कि यह विचित्र प्रकार का रोग है, क्योंकि इसका कारण मन में तथा लक्षण शारीरिक होते हैं। सर्वप्रथम इसे Psycho physioligic disorder कहा गया। कुछ देशों में इसे Cortico Viceral कहा जाता है।

मनोदैहिक या Psychosomatic दो शब्दों का योग है। "Psyche" तथा "soma" जिसका शाब्दिक अर्थ है 'मन' और 'दैहिक' और शाब्दिक अर्थ के अनुसार वैसा रोग जिसके कारण तो मानसिक हैं पर लक्षण शारीरिक। इस धारणा (Psychosomatic) का उदय स्वतंत्र स्नायु मंडल (autonomic nervous system) के विकास के ज्ञान के साथ-साथ हुआ है। इसमें यह पाया गया कि स्नायुमंडल में किसी भी प्रकार की गड़बड़ी हो तो शरीर में भी गड़बड़ी आ जाती है। इसमें व्यक्ति की चिन्तन प्रक्रिया (thinking process) तथा संवेग (emotions) में परिवर्त्तन आ जाता है। यही परिवर्त्तन शारीरिक तंत्र में भी परिवर्त्तन लाते हैं।

रेबर (1987) ने इसे इस प्रकार परिभाषित किया है– ''मनोदैहिक–विकृति का तात्पर्य उस विकृति से है जिसके लक्षण दैहिक होते हैं तथा जिसका कारण कम-से-कम आंशिक रूप से संज्ञात्मक तथा संवेगात्मक अर्थात् मनोवैज्ञानिक होता है।

इस प्रकार मनोदैहिक बीमारी' मनः स्नायुविकृति तथा मनोविकृति से भिन्न है, क्योंकि उसके लक्षण व कारण दोनों मानसिक या मनोवैज्ञानिक होते हैं। स्वतः संचालित स्नायु तंत्र स्नायु प्रवाह को बदल देते हैं। शरीर के हार्मोन तथा देह रसायन (bio-chemistry) में बदल देते हैं–

कोलमैन ने मनोदैहिक बीमारी को इस प्रकार परिभाषित किया है–''इसमें शारीरिक लक्षण होते हैं जिसमें निरंतर संवेगात्मक तनाव की वजह से मस्तिष्क के टिशु नष्ट हो जाते हैं। इसमें एक अंग स्नायुतंत्र की हिस्सेदारी रहती है।'' किस्कर ने इस प्रकार परिभाषित किया है, ''मनोदैहिक विकृतियाँ उन अवस्थाओं को कहते हैं जिनमें शारीरिक लक्षण स्वतः स्नायुतंत्र से जुड़े होते हैं जो मुख्य रूप से मनोवैज्ञानिक दबाव के कारण होता है।''

इस क्षेत्र में मनः गतिकी की विचारधारा शारीरिक बीमारियों का विकास फ्रायड के शुरूआती निरीक्षण के फलस्वरूप हुआ, जिसकी चिकित्सा हिस्टिरिया के रूपान्तरित लक्षणों के फलस्वरूप हुआ। इस दृष्टिकोण से लक्षणों के सांकेतिक महत्व को बताया गया। इसका मतलब यह हुआ कि मनोदैहिक बीमारी से अचेतन मस्तिष्क में बढ़ी हुई चिंता के समाधान करने का एक तरीका है । इससे अचेतन में दबी आवश्यकताओं तथा इच्छाओं को संतुष्टि मिलती है।

इसकी तुलना रूपान्तर हिस्टिरिया से की गई है, क्योंकि ऊपरी तौर पर हिस्टिरिया के भी कारण मनोवैज्ञानिक तथा लक्षण शारीरिक होते हैं, परन्तु इन दोनों रोगों में फर्क है। हिस्टिरिया के लक्षणों में

टिशुओं को नुकसान नहीं पहुँचता है जबकि मनोदैहिक बीमारी में होते हैं। इसके अलावा हिस्टिरिया के लक्षण सांकेतिक हैं जबकि मनोदैहिक बीमारी के लक्षण सांकेतिक नहीं हैं।

8.2.2 APA मनोदैहिक बीमारी का वर्गीकरण (Classification According to American Psychological Association)

सामान्यतः मनोदैहिक बीमारी को मुख्य तीन समूहों में बाँटा गया है–

1. Psychosomatic disorder related to personality : इस समूह का सम्बन्ध व्यक्ति के व्यक्तित्व से होता है, जैसे–एक चिंतित व्यक्ति का सम्बन्ध श्वास सम्बन्धी बीमारियों से होता है।

2. Psychosomatic disorder related to life style : इस समूह का सम्बन्ध जीवन जीने के ढंग पर होता है। ये अधिकतर गैस्टीक की समस्या से ग्रसित होते हैं।

3. Psychosomatic disorder related to objects and situations : इस समूह का सम्बन्ध विभिन्न वस्तुओं तथा परिस्थितियों से होता है जिसके प्रति व्यक्ति अत्यधिक प्रतिक्रिया व्यक्त करता है। जैसे–विभिन्न प्रकार की वस्तुओं के प्रति एलर्जी।

इसी प्रकार APA का दूसरा वर्गीकरण अंगों के involvement पर आधारित है–

1. मनोदैहिक त्वचा विकृति (Skin disorder) : इसमें dermatitis, ache, hives आदि इस श्रेणी के अर्न्तगत आते हैं।

2. मनोदैहिक श्वसन विकृति (Psychosomatic respiratory disorder) : इस श्रेणी में दमा, उच्च रक्त चाप, हिचकी तथा बार-बार खाँसी आना आदि आता है।

3. मनःस्नायु पेशीय विकृति (Psychosomatic muscle related disorder) : इसमें पीठ दर्द, मांसपेशियों में खिंचाव, तनाव, सरदर्द, अर्थराइटिस इत्यादि आते हैं।

4. मनोदैहिक हृदय वाहिक विकृति (Psychosomatic cardio vascular disorder) : इसमें Paroxysmal tachycardia, उच्च रक्तचाप, Vascular spasm इत्यादि हैं।

5. मनोदैहिक हेमिक और लिम्फीक विकृति (Psychosomatic Hemic & Lymphatic disorder) : इसका प्रभाव पूरे शरीर पर पड़ता है।

6. मनोदैहिक जनन मूत्र विकृति (Psychosomatic genitourinary disorder) : यह मुख्यतः मासिक धर्म और जनन सम्बन्धी विकृतियों से होता है।

7. मनोदैहिक आमाशयांत्र विकृति (Psychosomatic gastrointestinal disorder) : इसमें पेप्टिक अल्सर, गैस्टीक अल्सर तथा उच्च अम्लता होती है।

8. मनोदैहिक अन्तः स्रावी विकृति (Psychosomatic endocrine disorder) : इसमें मुख्यतः थायरॉइड ग्लैंड से सम्बन्धित विकार पाए जाते हैं।

9. मनोदैहिक विशिष्ट ज्ञानेन्द्रिय सम्बन्धी विकृति (Psychosomatic disorder of special organ) : इसमें आँख आना तथा आँख से सम्बन्धित अन्य विकार हैं।

10. मनोदैहिक पेशीय पंजरीय विकृति (Psychosomatic musculoskeletal disorder) : इसमें हड्डियों से सम्बन्धित रोग होते हैं, जैसे–हाथ-पाँव से सम्बन्धित।

अब हम इनकी विशद चर्चा करेंगे–कुछ खास प्रकारों के बारे में।

अमाशयांत्र विकृति (Gastro intestinal disorder) : इस प्रकार की मनोदैहिक विकृति का

सम्बन्ध आँतों से होता है। यह तनावपूर्ण परिस्थिति के कारण होता है जो पाचन क्रिया को प्रभावित करती है। इसमें तीन प्रमुख प्रकार की विकृति है–

(i) आँत का घाव (Peptic ulcer) : इस विकृति में आंत घावों से भरा रहता है, उसमें दर्द होता है, उल्टियाँ तथा पखाना के साथ खून आता है।

इसका प्रमुख कारण ईर्ष्या व चिंता है। इसमें आंत्र रस का भी महत्वपूर्ण हाथ है। ये म्यूकस, पेप्सिन तथा हाईड्रोक्लोरिक एसिड है, फिर भी निश्चित कारण बताना बड़ा मुश्किल है कि किस कारण से पेप्टिक अल्सर होता है। ऐसा समझा जाता है कि इसका सम्बन्ध स्वतः संचालित स्नायुतंत्र, आंतों तथा पेट से है। इसका एक कारण निरन्तर तनाव भी है। Wald P Mckinnon (1972) ने चूहों पर प्रयोग करके यह बताया कि तनाव का असर अल्सर पर है। Liss, Apler तथा Woodruff ने बताया कि 93% irritable colon के कारण होता है। इन्होंने अपना प्रयोग बन्दरों पर किया, जिसमें उन्हें आघात के लगातार वार से बचना था।

यह औरतों की अपेक्षा पुरुषों में, देहात की अपेक्षा शहरों में तथा माँ की ट्रेनिंग पर निर्भर करता है।

(ii) Anorexia Nervosa : इस प्रकार की मनोदैहिक विकृति में पाचन में गड़बड़ी, उल्टी, मितली आदि है। इसका कारण बचपन का प्रक्षेपण (Projection) है।

(iii) Chronic gastrictis : इसमें अनपच, मितली, खट्टी डकार, इत्यादि है तथा इसका कारण मनोवैज्ञानिक दबाव (stress) ।

(iv) Coitis : इसमें प्रमुख लक्षण कब्ज, पेट दर्द, अनियमित पखाना इत्यादि है। मुख्य कारण मनोवैज्ञानिक दबाव है।

हृदय संबंधी विकृति (Cardio vascular disorder) : इस प्रकार की मनोदैहिक विकृति में हृदय तथा रक्त नलिकाओं से सम्बन्ध होता है। इसका सम्बन्ध कठिन संवेगनात्मक अवस्था है जो स्वतः संचालित स्नायुमंडल से नियंत्रित होती है। इसके कुछ प्रमुख प्रकार निम्नलिखित हैं–

(i) सिर दर्द (Migraine headace) : इस प्रकार की मनोदैहिक विकृति में आधे सिर में तीव्र दर्द होता है, इसलिए इसे अधकपारी सरदर्द भी कहा जाता है जो कभी इधर तो कभी उधर होता रहता है। यह दर्द कभी-कभी होता है जिसमें कपाल की नसें फूल जाती हैं। इसका कारण कभी दैहिक तो कभी मनोवैज्ञानिक होता है। कभी-कभी दर्द खत्म हो जाता है तो कभी बिना दवाइयों के खत्म नहीं होता।

इसके कारण सामाजिक, सांस्कृतिक तथा उच्च इच्छा शक्ति वाले लोगों में, कड़े दिमाग वाले तथा संवेदी लोगों में अधिक होता है। यह औरतों में तथा शहरी लोगों में ज्यादा पाया जाता है। कभी-कभी दवाइयों से फायदा होता है तो कभी non-adaptive reaction pattern का इस्तेमाल करने से।

(ii) हृदय रोग (Heart disease) : जब हृदय रोग मनोवैज्ञानिक कारणों से होता है तो यह संवेगात्मक तनाव के कारण होता है। इससे रक्त नलिकाओं के टिशू क्षतिग्रस्त हो जाते हैं। इसका कारण अत्यधिक उत्तेजना है। यह चिड़चिड़ापन तथा दबाव के कारण भी होता है। Rosenmann, (1974) ने बताया कि इस प्रकार के हृदय रोग व्यक्तित्व की विशेषताओं पर निर्भर करते हैं।

(iii) उच्च रक्तचाप (High blood pressure) : उच्च रक्त चाप के प्रमुख लक्षण चिन्ता, सरदर्द, चिड़चिड़ापन या कुछ अन्य दैहिक कारण तथा कुछ के मनोवैज्ञानिक कारण हैं।

इसका प्रमुख कारण संवेगनात्मक तनाव है। इसका इलाज उस तरह की परिस्थिति से छुटकारा पाने तथा दवा खाने से बचा जा सकता है।

इसके अन्य प्रकार tachycardia, anginal syndrome हैं।

साँस संबंधी विकृति (Respiratory disorder) : इसका सम्बन्ध श्वास सम्बन्धी समस्याओं से होता है, इसके कुछ प्रमुख प्रकार दमा, सर्दी, टी० बी०, हे बुखार, साइनस आदि है।

(i) दमा (Asthama) : यह सामान्यतया अधिक पाया जाता है, इसे दमा कहते हैं। इसके मुख्य लक्षण दम फूलना, श्वास लेने में कठिनाई इत्यादि है। यह श्वास नली में आई बाधा के कारण होता है। इस पर धुआँ, धूल आदि का प्रभाव पड़ता है, इसे "Convulsive coughing भी कहते हैं। यह पुरुषों में अधिक तथा स्त्रियों में कम पाया जाता है।

इसका कारण अति संवेदनशीलता तथा एलर्जी है, तथा असुरक्षा का भाव है। कुछ अध्ययन इस बात पर बल देते हैं कि दबाव तथा संवेगनात्मक तनाव के कारण होता है। Prucell, Muser, Milklich तथा Deilker (1969) ने 344 रोगी का अध्ययन किया (उम्र 6-16) तथा पाया कि संवेगात्मक तनाव मुख्य कारण है। कुछ में वैवाहिक समस्याओं के कारण होता है। आश्रित होने के कारण तथा सुरक्षा के भाव के कारण भी होता है।

मनोविश्लेषण सम्बन्धी विचार को मानने से यह अचेतन में दमित इच्छाओं के कारण होता है क्योंकि लिबिडो का स्थिरीकरण (fixation) analstage (retentive) में होता है। इसका उपचार मेडिकल चिकित्सा तथा मनो चिकित्सा है।

(ii) यक्ष्मा (Tuberculosis) : यह दूसरा प्रकार है जिसमें लंग्स फूल जाते हैं, उसमें दर्द तथा लगातार कफ होता है।

इसका कारण शारीरिक होता है तथा कभी-कभी मनोवैज्ञानिक, जैसे–चिंता, संवेगनात्मक तनाव। फ्रायड का मानना है कि यह दमित यौन संघर्षों के कारण होता है। ताजे अध्ययनों के अनुसार यह विषाद और उन्माद (गुस्सा) के कारण होता है (Goodwin etal, 1973)

त्वचा विकृति (Psychosomatic Skin disorder) : यह शताब्दियों से पहचाना गया है। किस्कर का मानना है कि त्वचा व्यक्ति के संवेगों का आइना है क्योंकि यह बहुत संवेदनशील होता है। यह विभिन्न प्रकार के त्वचा सम्बन्धी रोग होते हैं। यह स्वतः संचालित स्नायुमंडल से नियंत्रित होता है। जैसे–विभिन्न संवेगों का पता चेहरे की त्वचा से चल जाता है। इसके कुछ प्रमुख प्रकार इस प्रकार हैं–

(i) स्नायुत्वचा शोथ (Neuro dermatitis) : यह व्यक्ति की त्वचा से सम्बन्धित है जिसमें प्रमुख लक्षण फूलना, लहरना (जलन), हाथ एवं ओठों में। यह पुरुषों में अधिक पाया जाता है। इसका कारण यौन सम्बन्धों में निराशा तथा दमित प्रदर्शन की प्रवृत्ति है।

(ii) एलर्जिक एकजिमा (Allergic eczema) : इसमें मुख्य रूप से हाथ-पाँव, गर्दन में घाव होता है, यह मनोवैज्ञानिक होता है तथा अत्यधिक क्रोध इसका कारण है।

(iii) चकत्ता (Stigma) : यह हाथ-पाँव तथा शरीर के पिछले भाग में होता है। यह ज्यादातर स्त्रियों में होता है तथा Feedback से इसका इलाज सम्भव है।

(iv) Scratching and Liching) : इस रोग के कारण क्रोधपूर्ण भाव हैं। कोलमैन ने इसे "displacement of aggression" कहा है।

अन्तःस्रावी मनोदैहिक विकृति (Psychosomatic Endocrine disorder) : हमारे शरीर में दो प्रकार के ग्लैंड होते हैं, एक नली वाहिका (duct) तथा दूसरा नलीविहीन (ductless) । अन्तःस्रावी ग्रंथियाँ नलिका विहीन होती हैं। जिसमें कुछ प्रमुख (Pitutary, adrenal, Hyroid) हैं जो स्वतः संचालित स्नायुतंत्र से प्रभावित होती हैं (Sympathetic system) ।

इसके कारण संवेगात्मक हैं, दबाव, मोटापा, असहनीय तनाव व निराशा हैं।

जनन-मूत्र विकृति (Psychosomatic Genitourinary disorder) : यह कटि प्रदेश में पायी जानेवाली विकृति है। यह पेशाब तथा यौन प्रक्रिया में होता है। इसके प्रमुख प्रकार इस तरह हैं–

1. पेशाब संबंधी विकृति (Unitary disordar)
2. रजोधर्म संबंधी विकृति (Menstural disordar)
3. Pseudocyesis
4. यौन विकृति (Sexual deviations)
5. Spontaneous abortion

इन सभी प्रकारों का सम्बन्ध मनोवैज्ञानिक तत्वों से होता है। स्टौब (Straub, 1989) ने अपने अध्ययन के आधार पर बताया कि पेशाब की बीमारियाँ चिंता, भय तथा क्रोध के कारण होती हैं। मनोविश्लेषक बताते हैं कि माता-पिता के प्रति ईर्ष्या का भाव है।

इसी प्रकार मासिक प्रक्रिया के साथ भी जुड़े हैं, जिनमें चिंता तथा मानसिक संघर्ष प्रमुख है। इसके प्रमुख लक्षण ध्यान केन्द्रित करने में असमर्थता तथा emotional outbrust है। इसमें कुछ शारीरिक लक्षण भी होते हैं जैसे सरदर्द, पीठ दर्द तथा नींद की कमी । Freed (1975) ने पाया कि जिस औरत में dysnenormea पाया जाता है उसमें मर्दो जैसे शारीरिक गुण पाए जाते हैं। कुछ का मानना है कि यह छुपी हुई समलैंगिकता है।

8.2.3 मनोदैहिक विकृति के कारण (Causes of Psychosomatic disorder)

मनोदैहिक विकृति के कारणों को निम्नलिखित श्रेणी में रखते हैं–

1. जैविक कारक (Biological factor)
2. मनोवैज्ञानिक कारक (Psychological factor)
3. सामाजिक कारक (Sociological, cultural factor)

जैविक कारक (Biological factor) : इस समूह के अन्तर्गत निम्न तत्व महत्वपूर्ण हैं–

(i) वंश परम्परा (Heredity factor) : अध्ययन के आधार पर यह पता चला है कि यह प्रकार वांशिक (genetic) तत्वों (Rosener, 1975) के कारण होता है। जैसे–पेप्टिक अल्सर, उच्च रक्त चाप तथा अस्थमा परिवार में तथा सम्बन्धियों के बीच पाया जाता है, परन्तु कुछ विपरीत अध्ययन भी प्राप्त हुए हैं जो यह बताते हैं कि यह वंश परम्परा के कारण नहीं होता है।

(ii) शारीरिक कमजोरी (Physical weakness) : कुछ अध्ययनों के आधार पर यह पता चला है कि मनोदैहिक विकृति कुछ हद तक शारीरिक कमजोरियों के कारण होता है, जैसे–अल्सर, आंत की कमजोरियों तथा टी० बी० और दमा तनाव को नहीं सहने के कारण हो जाता है।

(iii) शारीरिक संतुलन में उपद्रव (Disturbance in Homeostasis) : हमारे शरीर में हमेशा संतुलन बनाए रखने की प्रवृत्ति पाई जाती है। यह तनाव के कारण बढ़ जाता है और संतुलन बिगड़

जाता है।

मनोवैज्ञानिक कारक (Psychological factor) : इसके लिए कुछ मनोवैज्ञानिक तत्व भी उत्तरदायी हैं–

(i) दूषित मनोवृत्ति (Faulty attitude) : सेली (Selye, 1953) ने इसे मुख्य कारण माना है। इसमें चिंता मुख्य है। जिन लोगों में प्रतियोगिता की भावना अधिक होती है तथा किसी चीज के प्रति कठोर भावना होती है, उन्हें मनोदैहिक विकृति आसानी से हो सकती है।

(ii) व्यक्तित्व रचना (Personality makeup) : कुछ लोगों का व्यक्तित्व ऐसा होता है कि वे उच्चाभिलाषी होते हैं, आत्मनिर्भरता का भाव होता है। यही कारण है कि तनाव और चिंता से भरे हुए होते हैं और वे इस विकृति से प्रभावित होते हैं।

(iii) तनावपूर्ण परिस्थिति (Stress situation) : कोलमैन (1971) ने इसके बारे में बताया कि विश्वयुद्ध II के तनाव के बाद जो ज्यादातर तनाव से ग्रसित थे, उनमें अधिकतर आंत सम्बन्धी विकृति पाई गई।

(iv) अचेतन संघर्ष (Unconscious conflicts) : मनोगतिकी दृष्टिकोण के अनुसार अचेतन मन के संघर्ष मनोदैहिक विकृति के लिए उत्तरदायी हैं। किस्कर (1982) ने इस तथ्य का वर्णन फ्रायड के निरीक्षण के आधार पर किया है।

सामाजिक कारण (Socio cultural factor) : कुछ हद तक मनोदैहिक विकृति सामाजिक सांस्कृतिक कारकों पर निर्भर करती है। जैसे–अधकपारी, पेप्टिक अल्सर में समाज व्यक्ति को सीधे तरीके से प्रभावित करता है, जैसे–आधुनिकीकरण, औद्योगीकरण (industrialization) आदि मुख्य कारण हैं। चिंता, संघर्ष व तनाव का डिवोस (Devos, 1973) ने समर्थन किया। सामाजिक स्तर भी इस विकृति को प्रभावित करता है। इन्होंने संस्कृति के प्रभाव को भी बताया, जैसे–जापान में हृदय सम्बन्धी रोग सबसे कम पाए जाते हैं जबकि अमेरिका में सबसे अधिक। जापान के लोगों के जीवन में स्थिरता है। इसी प्रकार जिनमें अल्सर पाया जाता है वे उच्च सामाजिक स्तर से आते हैं।

8.2.4 मनोदैहिक विकृति की उपचार-विधियाँ (Remedies of Psychosomatic disorder)

मनोदैहिक विकृति में सुधार के लिए तीन प्रकार की चिकित्सा प्रविधियाँ अपनाई जाती हैं–

1. जैविक उपाय (Biological measures) : यह उन विकृतियों के उपचार के लिए लगाया जाता है जो वंशानुगत कारणों से होते हैं, जैसे–पेप्टिक अल्सर, दमा तथा अन्य श्वास सम्बन्धी बीमारियाँ। सुबक-शार्प (Suback-sharpe, 1973) तथा गोयायन (Gooynne, 1974) ने एक्यूपंचर को शारीरिक व्याधियों का सबसे अच्छा उपचार बताया है। यह पद्धति चीन में बहुत लोकप्रिय है। Heart (1974), Miller (1914) ने बताया कि नींद की कमी (Insomania) का सबसे अच्छा इलाज विद्युत-चिकित्सा (electrocevebral electro therapy) है।

मनोवैज्ञानिक उपचार के अन्तर्गत व्यवहार चिकित्सा का उपयोग किया जाता है, जो शिक्षण सिद्धान्त परं आधारित है। इसमें जो कुसमायोजित व्यवहार सीखे गए हैं उनको हटाने के लिए deconditioning उपयोग में लाया जाता है, यानि व्यवहार में परिवर्त्तन विलोप (extinction) से लाया जा सकता है। मीलर (Miller, 1969) साधनात्मक अनुकूलन (operant conditioning) से चूहों के heart rate तथा पेशाब की प्रक्रिया में फर्क लाये। लेजारस (Lazarus, 1971) ने एक व्यक्ति का इलाज किया जिसका अन्य औरत के साथ सम्बन्ध था, उसको दूसरी औरत की तस्वीर को दिखा कर विद्युत का झटका लगाया गया तब तक, जबतक वह अपनी पत्नी की तस्वीर न देखने लगा तथा लौटकर आने की बात कही। इसी प्रकार की चिकित्सा एनौकेसिया नरभोसा (anorexia nervosa) के लिए दी गई।

उल्पे (Wolpe, 1961) का मानना है कि इससे फोबिया के 97% रोगी का इलाज किया जा सकता है। परन्तु यह उपचार प्रविधि बहुत यांत्रिक है तथा इससे रोगी को चिकित्सक के प्रति सकारात्मक प्रवृत्ति विकसित होती है।

जैव-पुनर्निवेशन (Biofeed back) तकनीक की शुरूआत 1960 में हुई। यह आत्मनियंत्रण रचना (Self-regulating mechanism) है जैसे–तापमान, हृदयगति, मस्तिष्क तरंग, श्वांस गति आदि का नियंत्रण होता है। Cornhan (1973) तथा Kleinman (1977) ने इस अध्ययन को support किया। इससे गैस्ट्रीक, डायरिया आदि के लक्षण दूर किए गए।

8.2.5 मनोविकृत व्यक्तित्व (Psychopathic personality)

यह एक बहुत महत्वपूर्ण नैदानिक समस्या है। यह मनः स्नायुविकृति नहीं है और न ही मनोबिकृति है, क्योंकि इसके लक्षण इससे नहीं मिलते हैं। ये साधारणः सामान्य व्यक्तित्व और बुद्धि के मालिक होते हैं, परन्तु नैतिक आधार पर इन्हें बड़ी शीघ्रता से पहचाना जा सकता है। Peter Stratton तथा Nicky Hayes, 1991 ने इसे इस प्रकार से परिभाषित किया है, "साइकोपैथिक व्यक्तित्व एक प्रकार की व्यक्तित्व विकृति है जिसमें व्यक्ति चिंता तथा दोष भावना से मुक्त होता है, समाज के नियम–कानून, रीति-रिवाज का उल्लंघन करता है और इन्हें दूसरे से कोई मतलब नहीं होता है। इसमें प्रमुख लक्षण इस प्रकार पाए जाते हैं–

1. ये नैतिक दृष्टिकोण से मूढ़ (Ethical embecile) होते हैं।
2. अपने पूर्व अनुभवों से फायदा नहीं लेते (inability to profit from mistakes).
3. उत्तरदायित्व की भावना का अभाव (Irresponsible)
4. आवेगी तथा चिड़चिड़े होते हैं (Impulsive & imitable)
5. सतही संवेग (Superficial emotion)
6. नैतिक विकास का अभाव (Lack on moral development)
7. ये गैर सामाजिक व्यक्तित्व हैं (Anti-social personality)
8. इनका नैतिक विकास नहीं होता (lack of moral or ethical development)
9. युक्ताभास और प्रक्षेपण की प्रवृत्ति (Quick ability to rationalize & project)

8.2.6 मनोविकृत व्यक्तित्व के कारण (Causes of Psychopathic personality)

इनके कारकों को भी तीन श्रेणी में रखा गया है–

1. जैविक कारण (Biological factor) : आइजेक के अनुसार (1960) शारीरिक बनावट ही महत्वपूर्ण कारक है। इनका स्वतः संचालित स्नायु मंडल विकसित नहीं होता है जिसके कारण इनका नैतिक विकास नहीं होता है। होज (Hodge, 1985) ने बताया कि असमान मस्तिष्क तरंगें इसका कारण हैं। 80% तक लेविट तथा बॉस (Leavitt & Bass, 1984) ने बताया कि मस्तिष्क का गलत विकास इसका कारण है।

2. मनोवैज्ञानिक कारक (Psychological factor) : इस तथ्य को नैदानिक मनोवैज्ञानिक तथा मनः चिकित्सक दोनों स्वीकार करते हैं। इसका कारण त्रुटिपूर्ण मनोलैंगिक विकास (Psychosexual development) है। कुछ यह मानते हैं कि गलत बच्चों की पालन-पोषण पद्धति (child rearing practice) के कारण होता है। इसे समर्थन दिया रोबिन (Robin, 1960), ग्रीन (Green, 1964) तथा उल्फमैन (Olfman, 1967) ने। कुछ महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक तत्व इस प्रकार हैं–

(i) पैतृक मनोवृत्ति (Parental attitude) : बच्चे के बारे में क्या सोचते हैं उन्हें नकारते (rejection) हैं अथवा नहीं।

(ii) अति आसक्ति (Overindulgence) : बच्चों के प्रत्येक कार्य में हस्तक्षेप करना नैतिक विकास नहीं होने देता है।

(iii) पैतृक वंचन (Parental deprivation) : अगर माता-पिता की कमी है तो उसका नैतिक विकास नहीं हो पाता, क्योंकि कोई सिखाने-बताने वाला नहीं रहता।

(iv) विघ्न परिवार (Broken homes) : माँ-बाप में तलाक, अलगाव इसका एक कारण है।

3. सामाजिक कारक (Socio-cultural factor) : यह भी एक महत्वपूर्ण कारक है, क्योंकि हमारे यहाँ सामाजिक स्तर एक जैसा नहीं है। जो निचले और मध्यम स्तर से आते हैं उन्हें गरीबी, निराशा, तकलीफें झेलनी पड़ती हैं, इसलिए वे वंचित (disadvantaged) होते हैं।

सांस्कृतिक विभिन्नता के कारण भी वे 'law brokers' बन जाते हैं, इसलिए इन्हें गैर सामाजिक व्यक्तित्व (anti-social personalities) भी कहा जाता है।

8.2.6 मनोविकृत व्यक्तित्व का उपचार (Remedial means of Psychopathic Personality)

साइकोपैथ को हास्पीटल की आवश्यकता नहीं होती है। मनोचिकित्सा से इनका इलाज किया जा सकता है, इन्हें ठीक होने की प्रेरणा नहीं होती है, फिर भी इन प्रविधियों से उनका इलाज किया जा सकता है–

(i) वैयक्तिक चिकित्सा (Individual therapy) : क्योंकि अकेले में वे अपनी समस्याएँ आसानी से कहते हैं, इसे परामर्श (counsellings) भी कहते हैं।

(ii) व्यवहार चिकित्सा (Behaviour therapy) : यह शिक्षण सिद्धान्त कलासिकी Classical तथा साधनात्मक अनुकूलन (operant conditioning) पर आधारित है। व्यवहार परिवर्तन के लिए आसानी से इसका प्रयोग किया जाता है। बन्डूरा (Bandura, 1969) तथा वेलैन (Vallian) ने बताया कि antisocial personality के कुसमायोजित व्यवहार को आसानी से दूर किया जा सकता है।

(iii) समूह चिकित्सा (Group therapy) : इस प्रविधि से भी इनका सुधार किया जा सकता है। इसमें एक से अधिक रोगियों की चिकित्सा एक साथ की जा सकती है। यह सफल विधि है, पर समूह को एक जैसा बनाना एक कठिन कार्य है।

(iv) औषध चिकित्सा (Drug therapy) : कुछ खास दवाओं के माध्यम से इनका treatment किया जा सकता है तथा कुछ केसेज में विद्युत-आघात चिकित्सा से इन्हें ठीक किया जा सकता है।

8.2.7 निष्कर्ष (Conclusion)

इस पाठ का निष्कर्ष हम इस प्रकार निकाल सकते हैं; मनोदैहिक विकृति एक बहुत महत्वपूर्ण नैदानिक समस्या है, जिसके कारण मानसिक तथा समस्याएँ शारीरिक होती हैं। अमेरिकन साइकोलोजिक एसोसियसन (APA) द्वारा दिए गए वर्गीकरण को हम विस्तारपूर्वक देखते हैं। इनके कारण व सुधार की भी चर्चा की गई है। इसके साथ-साथ साइकोपैथिक व्यक्तित्व, उसके लक्षण तथा कारण की भी चर्चा की गई है।

इन तथ्यों की पूरी जानकारी मिलती है।

8.3 सारांश (Summary)

पूरे पाठ का संक्षेपण हम इस प्रकार कर सकते हैं–

1. मनोदैहिक विकृति दो शब्दों का योग है 'Psyche & soma.
2. इस विकृति में कारण मन में तथा लक्षण शारीरिक होते हैं।
3. यह मनःस्नायुविकृति तथा मनोविकृति से भिन्न प्रकार के होते हैं।
4. इसमें मानसिक मन्दता के लक्षण नहीं पाए जाते हैं।
5. इसके कई प्रकार हैं जो शारीरिक तंत्रों से जुड़े हैं, जैसे श्वसन तंत्र, दमा।
6. इसके कारण जैविक, मनोवैज्ञानिक तथा सामाजिक सांस्कृतिक हैं।
7. इसका सुधार भी जैविक, मनोवैज्ञानिक तथा सामाजिक स्तर पर किया जाता है।
8. साइकोपैथ एक सामाजिक समस्या है, जिसमें समाजविरोधी लक्षण पाए जाते हैं।
9. साइकोपैथ का नैतिक विकास नहीं होता है।
10. इनके लक्षण ऐसे नहीं रहते कि इन्हें आसानी से पहचाना जा सके। ये सामान्य लोगों की तरह होते हैं।
11. इनके कारण को तीन श्रेणी में रखा गया है– जैविक, मनोवैज्ञानिक तथा सामाजिक।
12. इसका सुधार individual, group behaviour तथा drug therapy से किया जाता है।

8.4. पाठ में प्रयुक्त प्रमुख शब्द (Key words used in this lesson)

(i) मन + शरीर (ii) Cortico viceral (iii) मनः शारीरिक (iv) आंत्र शोथ (v) Anorexia nervosa (vi) भयंकर गैस्ट्रीक (vii) मल का सूखना (viii) अधकपारी (ix) दमा (x) यक्ष्मा (xi) न्यूरोडरमिटीस (xii) एलर्जीक एकजीमा (xiii) स्टीग्मा (xiv) Pseudocyesis (xv) संतुलन (xvi) साइकोपैथिक व्यक्तित्व।

8.5. अभ्यास के प्रश्न (Questions for the exercise)

(a) वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. मनोदैहिक शब्द किन शब्दों से बना है?

(i) मनः + शरीर (ii) स्वतः संचालित स्नायु मंडल

(iii) मनोदैहिक (iv) Corticoviceral

उत्तर—(i)

2. मनोदैहिक आंत्र विकृति में–

(i) पेप्टिक अल्सर (ii) मासिक समस्याएँ

(iii) उच्च रक्तचाप (iv) दमा

उत्तर—(i)

(b) लघु उत्तरीय प्रश्न

1. मनादैहिक विकृति का वर्गीकरण (APA) के आधार पर करें।

उत्तर के लिए देखें–8.2.2 ।

2. आंत्र विकृति के प्रमुख प्रकारों के नाम बताएँ व वर्णन करें।

उत्तर के लिए देखें 8.2.2 ।

(c) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. किन्हीं दो प्रकार की मनोदैहिक विकृतियों का वर्णन करें।
2. मनोदैहिक विकृति से आप क्या समझते हैं? उनके कौन-कौन कारण हैं?
3. साइकोपैथिक व्यक्तित्व से आप क्या समझते हैं? इसके कौन-कौन लक्षण हैं?

8.6. प्रस्तावित पुस्तकें (Suggested Reading)

1. Shaffar & Lazaraus—Fundamental Concepts in Clinical Psychology.
2. Korchin—Clinical Psychology.
3. M. Sulaiman—Naidanik Manovigyan.

★

निदान

पाठ की संरचना

9.0. उद्देश्य

9.1. परिचय

9.2. मुख्य विचार

9.2.1 नैदानिक केस अध्ययन के कार्य

9.2.2 नैदानिक साक्षात्कार

9.2.3 नैदानिक मनोविज्ञान में परीक्षण की उपयोगिता

9.2.4 निष्कर्ष

9.3. सारांश

9.4. पाठ में प्रयुक्त प्रमुख शब्द

9.5. अभ्यास के प्रश्न

(a) वस्तुनिष्ठ प्रश्न

(b) लघु उत्तरीय प्रश्न

(c) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

9.6. प्रस्तावित पुस्तकें

9.0 उद्देश्य (Objective)

इस पाठ का उद्देश्य पाठकों को निदान (diagnosis) या नैदानिक निदान (clinical diagnosis) के विभिन्न पक्षों की जानकारी देना है। निदान का क्या अर्थ है? इसका स्वरूप क्या है? इसके कार्य क्या हैं आदि बातों की जानकारी पाठकों को देना इस पाठ का उद्देश्य है। इसके अलावा इस पाठ का यह भी उद्देश्य है कि पाठकों को निदान की विभिन्न प्रविधियों यथा केस-अध्ययन, साक्षात्कार आदि के साथ-साथ मनोवैज्ञानिक परीक्षणों की उपयोगिताओं एवं सीमाओं से अवगत कराया जाये। इस पाठ का यह भी उद्देश्य है कि वस्तुनिष्ठ प्रश्नों, लघु उत्तरीय प्रश्नों तथा दीर्घ उत्तरीय प्रश्नों के माध्यम से पाठकों की जाँच की जाय कि उन्होंने पाठ को कहाँ तक समझा है। अन्त में कुछ उपयोगी पुस्तकों की सूचना पाठकों को दी जाये ताकि वे और भी ज्ञान-अर्जन कर सकें।

9.1 परिचय (Introduction)

नैदानिक मनोवज्ञान में समस्याओं को समझने के लिए 'निदान' or 'diagnosis' का बहुत महत्व है। 'निदान' या 'मनोनिदान' एक ही प्रकार के शब्द हैं जिससे विभिन्न प्रकार के रोगों की पहचान कर चिकित्सा की सुविधा के लिए उनका वर्गीकरण कर दिया जाता है।

विभिन्न मनोवैज्ञानिकों ने निदान की परिभाषा अलग-अलग तरीके से दी है। जैसे रेबर (1987) के अनुसार, "निदान का तात्पर्य किसी रोग की विकृति, लक्षण, स्थिति आदि की पहचान से है"।

कोरचिन ने (1986) निदान शब्द का प्रयोग दो अर्थों में किया है।

(i) विस्तृत अर्थ (Broad meaning) : इस अर्थ में निदान से तात्पर्य उस प्रक्रिया से है जिसके द्वारा व्यक्तित्व की संरचना (structure) तथा गतिकी (dynamics) को समझने का प्रयास किया जाता है। इसमें औपचारिक तथा अनौपचारिक मूल्यांकन दोनों आते हैं।

(ii) सीमित अर्थ (Narrow meaning) : इसमें मानसिक रोगी को पहचान कर उसे निदान की प्रक्रिया सम्बन्धी कार्य संचालित किया जाता है यानि मनःचिकित्सीय रोग के प्रसंग में रोगी का मूल्यांकन किया जाता है।

इस प्रकार निदान या diagnosis का प्रयोग मेडिसिन में विस्तृत रूप से किया जाता है तथा मनोविज्ञान व सामाजिक कार्य (social work) में भी इसका उपयोग होता है। सामान्यतः निदान का अर्थ रोगों का वर्गीकरण तथा उसका अन्य परिस्थितियों के साथ सम्पर्क स्थापित करना है।

9.2. मुख्य विचार

9.2.1. नैदानिक केस अध्ययन का कार्य (Functions of diagnostic case study)

वाटसन (1949) के अनुसार निदान का कार्य सभी उपलब्ध सूत्रों से उपयोगी सूचनाएँ प्राप्त करना है। वास्तव में रोगी की समस्याओं को पूर्ण रूप से समझना है तथा भविष्य की योजना तैयार करनी है। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि महत्वपूर्ण तथ्य विभिन्न माध्यमों से एकत्रित कर उसे विभिन्न परिस्थितियों में पहचानना ताकि उनकी समस्याओं को समझकर उसे दूर करने का प्रयास किया जा सके।

इससे सम्बन्धित तथ्यों का संग्रह स्कूल, बालसुधार गृह, मनः चिकित्सा केन्द्र इत्यादि से केस रिकार्ड के रूप में (ग्रहण) इकट्ठा करता है। यह महत्वपूर्ण तथ्य है कि केस रिकार्ड की प्रभावकता को निदान एवं चिकित्सा के माध्यम से किया जाय। नैदानिक प्रक्रिया में चिकित्सक कई महत्वपूर्ण कार्य सम्भालते हैं। निटजेल, बर्नस्टीन तथा मिलिच (1994) ने नैदानिक प्रक्रिया में निदान (diagnosis) के महत्व पर बल दिया, उस रिकार्ड को संग्रह कर रखना, उसके परिवर्त्तन (changes & progress) तथा सुधार का संग्रह करना। मनः चिकित्सक तथ्य संग्रह के लिए केस इतिहास (case history) का फार्म रखते हैं और सुविधापूर्वक निम्नलिखित प्रकार के तथ्य एकत्रित करते हैं–

1. **पहचान के लिए एकत्रित तथ्य (Identifying data) :** इसे (bare line) अथवा आधारिक सूचना संग्रह भी कहते हैं । (Name, age, address etc.)

2. **संपूरक सूचना संग्रहण (Collection of supplementary information) :** इसमें बीते हुए जीवन के बारे में तथ्य संग्रह किया जाता है। (information about past life)

3. **उपयुक्त चिकित्सा-विधि का चुनाव (Selection of appropriate theraputic technique) :** यानि किस व्यक्ति के लिए कौन-सी विधि प्रयुक्त होगी। जैसे–व्यवहार चिकित्सा, विद्युत् आघात चिकित्सा, दवा चिकित्सा इत्यादि।

4. **चिकित्सा हस्तक्षेप की योजना (Plan for theraputic intervention) :** इसके अन्तर्गत कुछ विधियों जैसे (rapport) रागात्मक सम्बन्ध स्थापित करना, क्योंकि चिकित्सा की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि रागात्मक सम्बन्ध कितनी अच्छी तरह स्थापित हुआ है अथवा नहीं।

5. **प्रशासनिक एवं वैधानिक उत्तरदायित्व (Administrative & legal responsibility) :** निदान से न केवल उपचार में मदद मिलती है, बल्कि प्रशासनिक एवं वैधानिक उत्तरदायित्व निभाने

में भी मदद मिलती है। जैसे–रोगी को किस प्रकार का वातावरण एवं बर्ताव चाहिए।

6. उपचारोत्तर मूल्यांकन (Post-treatment evaluation) : उपचार के बाद चिकित्सक को यह पता चल जाता है कि रोगी में कितना सुधार हो रहा है तथा उसको चिकित्सा की आवश्यकता है या नहीं, अगर है तो कितनी।

7. व्यक्तित्व संरचना एवं गतिकी का अध्ययन (Study of personality structure and dynamics) : इस सम्बन्ध में पूरी जानकारी मिलने पर आगे अनुकूल योजना बनाने में सहायता मिलती है।

8. संघर्षों एवं अहमूरक्षा का अध्ययन (Study of conflicts & ego defences) : इसमें यह समझा जाता है कि रोगी के कौन-कौन संघर्ष हैं तथा इसके समाधान के लिए वह किन-किन रक्षायुक्तियों को प्रयोग में लाता है।

9. पूर्वानुमान करना (Making Prediction) : रोगी के बारे में कई तरह का पूर्वानुमान लगाना कि वह कैसा है, उसे चिकित्सा की जरूरत है या नहीं, वह परिवार व समाज के बीच रह सकता है अथवा नहीं।

10. उत्तरवर्ती क्रिया (Follow-up action) : अस्पताल से विमुक्त कर दिए जाने के बाद चिकित्सक उस पर नजर रखता है कि उसका व्यवहार किस प्रकार का है? कहीं पहले की तरह लक्षण तो विकसित नहीं हो रहा अथवा वह बिलकुल ठीक है? इस समय चिकित्सक की जिम्मेवारी और बढ़ जाती है।

कोलमैन (Coleman) ने निदान के निम्नलिखित प्रमुख कार्य बताए हैं–

1. रोगी के बारे में उसके विभिन्न लक्षणों को संग्रह कर एक सारांश प्रस्तुत करना (To obtain a summary view of symptom picture)

2. रोग के कारण और लक्षण को निर्धारित करना। (To determine the dynamics of the disorder)

3. रोगी का वर्गीकरण करना। (To classify the patient)

4. चिकित्सा का तार्किक आधार बनाना (To provide a rational basis of therapy)

5. पहचान के लिए आधार तैयार करना (To give a partial basis for prognosis)

निदान के कार्य (Functions of diagnosis)

थार्न (Thorne) ने निदान के निम्नलिखित कार्य बताए हैं–

1. मानसिक रोग को पहचानना तथा उसका कारण बताना। (To identify and reveal the cause of mental disorder)

2. दैहिक और प्रकार्यात्मक रोगों के बीच अन्तर बताना। (To distinguish between organic and functional disorder)

3. रोग कितना है तथा उसकी गम्भीरता क्या है? (To find the magnitude and seriousness of disorder)

4. रोग के बारे में अनुमान लगाना तथा उसकी चिकित्सा के बारे में योजना बनाना। (To draw inferance about disorder and plan for the future course of the therapy)

5. रोग की गतिकी के बारे में पूर्व कल्पना करना तथा लक्षणों का निर्धारण करना (To formulate a dynamic hypothesis about the disorder on the basis of symptom underlying mechanism)

इन सब कार्यों के अलावा नैदानिक मनोवैज्ञानिक के कार्य में काफी महत्वपूर्ण परिवर्त्तन पाए गए हैं। उन परिवर्त्तनों का कारण व्यक्तित्व के सिद्धान्त का विकास तथा अभियोजन के क्षेत्र में हुए भिन्न-भिन्न प्रकार के शोध से है। आजकल मनोवैज्ञानिक रोगी की समस्याओं को समझते हैं तथा उनके पूरे व्यक्तित्व का मूल्यांकन करते हैं।

आज के युग में निदान के जरिए कई पहलुओं का मूल्यांकन करते हैं, जिसके दो दृष्टिकोण का यहाँ अध्ययन किया गया है–

1. **वर्गीकरण पर आधारित निदान (Diagnosis based upon classification) :** मानसिक रोगों का वर्गीकरण सर्वप्रथम क्रेपलिन ने किया। इसके बाद भी कई मनोवैज्ञानिकों ने इसका वर्गीकरण किया, परन्तु सबसे ज्यादा महत्व W.H.O. विश्व स्वास्थ्य संगठन (World Health Organization) के द्वारा दिए गए वर्गीकरण (classification) को मिला। इसके छह प्रभाग (categories) किए गए हैं, जो निम्नलिखित हैं–

   (i) **मनोविकृति (Psychosis) :** यह एक जटिल प्रकार का मानसिक रोग है जिसमें प्रमुख सिजोफ्रेनिया (Schizophrenia), उत्साह-विषाद मनोविकृति (Manicdepressive Psychosis) तथा पारानोइया (Paranoia) आदि प्रमुख है। इसके मुख्य लक्षण भ्रांन्ति (delusion) तथा विभ्रम (hallucinations) हैं। इसका उपचार बहुत कठिन है।

   (ii) **मनः स्नायुविकृति (Psychoneurosis) :** यह एक सरल प्रकार का मानसिक रोग है जिसमें व्यक्ति का वास्तविकता से सम्बन्ध होता है। इसके प्रमुख प्रकार चिन्ता, मनः स्नायु विकृति (anxiety neurosis), मनोग्रस्ति बध्यता, स्नायु विकृति (Obsessive compulsive neurosis), उन्माद (Hysteria), मनः स्नायु दुर्बलता (Neurosthenia) आदि की चर्चा की गई है। चिंता और संघर्ष इसके प्रमुख लक्षण हैं। इसका उपचार बड़ी आसानी से किया जा सकता है।

   (iii) **मनः शारीरिक विकृति (Psychosomatic or physiologic disorder) :** इस प्रकार की विकृति का आधार मन तथा उसके लक्षण शारीरिक होते हैं। इस श्रेणी में आंत का घाव (Peptic ulcer), दमा (Asthma), उच्च रक्तचाप (High blood pressure) आदि आते हैं।

   (iv) **मनोरोग व्यक्तित्व (Psychopathic personality) :** इन्हें antisocial personality या समाज विरोधी व्यक्तित्व भी कहते हैं। इनका नैतिक व सामाजिक विकास कम होता है। ये समाज के लिए घातक व हानिकारक होते हैं। ये उत्तरदायित्व नहीं समझते तथा ध्यान केन्द्रित नहीं कर पाते हैं।

2. **व्यक्तित्व गतिकी तथा सामाजिक सम्बन्धों पर आधारित निदान (Diagnosis based upon dyamics and social relation-ships) :** इस दृष्टिकोण के अनुसार रोगी के बारे में पूरी विस्तृत जानकारी (व्यक्तित्व गतिकी) तथा उसके साथ-साथ उसके पूरे जीवन की परिस्थिति का सम्पूर्ण एवं विशद अध्ययन होना चाहिए। जैसे–रोगी के विगत जीवन (Past life), वर्त्तमान घर की स्थिति (Present home situation), जीविका तथा अन्य सामान्य सामाजिक अभियोजन (occupational and general social adjustment is important) आदि महत्वपूर्ण हैं। इसमें दुखद वैवाहिक जीवन, तलाक, माता-

पिता के साथ दुखद सम्बन्ध इत्यादि देखे जाते हैं, क्योंकि इसका व्यक्ति के व्यक्तित्व पर महत्वपूर्ण असर देखा जाता है।

अन्य अध्ययनों के आधार पर भी यह पाया गया है कि समाज (society) भी एक महत्वपूर्ण कारक है, मानसिक रोग विकसित करने में। इस अध्ययन का समर्थन Wolman (1966) तथा Opler (1969) ने किया।

कोलमैन (1950) ने बताया कि निदान के लिए मुख्य रूप से चार प्रकार के तथ्य (data) आवश्यक हैं–

1. **चिकित्सा प्रदत्त (Medical data) :** रोगी की वर्त्तमान शारीरिक अवस्था का पता लगाकर रोग का पता लगाया जाता है।

2. **मनोवैज्ञानिक प्रदत्त (Psychological data) :** इसके अन्तर्गत रोगी के लक्षण, बौद्धिक क्षमताएँ, प्रेरणा आदि तत्व आते हैं। प्रदत्त प्राप्त करने के लिए साक्षात्कार, निरीक्षण आदि का प्रयोग किया जाता है।

3. **सामाजिक प्रदत्त (Sociological data) :** इसके अन्तर्गत रोगी का घरेलू जीवन, वैवाहिक जीवन, व्यवसाय, घर की स्थिति, सामाजिक सम्बन्ध आदि आते हैं।

4. **ऐतिहासिक प्रदत्त (Historical data) :** इसके अन्तर्गत स्वास्थ्य, पाठशाला, व्यवसाय, सामाजिक तथा पारिवारिक इतिहास का वर्णन किया जाता है।

यद्यपि निदान (diagnosis) का आजकल बहुत विस्तृत अर्थ में प्रयोग किया जाता है, फिर भी इसमें अभी भी कुछ तथ्य ऐसे हैं जिसके बारे में आज भी कई गलत धारणाएँ (mis-understanding) है। कई चिकित्सकों ने anti-diagnosis bias का जिक्र किया है। यह अमेरिका में हुए मनोविश्लेषण के प्रभाव के कारण पुरानी धारणाएँ बदल गयीं। परन्तु आज के इस युग में निदान के महत्व को स्वीकारा गया है।

9.2.2 नैदानिक साक्षात्कार (Diagnostic interview)

रोगी के बारे में तथ्य संग्रह करने की अनेक विधियाँ हैं जिसमें प्रमुख एक नैदानिक साक्षात्कार है। नैदानिक मनोविज्ञान में इसका बहुत महत्व है। इसके स्वरूप की व्याख्या करने के लिए कई मनोवैज्ञानिकों ने कोशिश की है–

मेटाराजो (Matarazoo, 1965), "साक्षात्कार एक प्रकार की बातचीत है जिसमें दो व्यक्ति तथा आजकल दो या दो से अधिक व्यक्ति मौखिक तथा अमौखिक पारम्परिक क्रियाओं में किसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए संलग्न रहते हैं"।

मर्फी (Murphy) तथा डैवीशोफर (Davidshofer, 1988) : "नैदानिक साक्षात्कार परीक्षक तथा परीक्षार्थी के बीच कम संचरित पारस्परिक-क्रिया का परिचायक होता है।" इस प्रकार साक्षात्कार की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं–

1. आमने-सामने की परिस्थिति में होनेवाला वार्तालाप है।

2. साक्षात्कार में साक्षात्कार लेनेवाले की भूमिका में चिकित्सक तथा साक्षात्कार देनेवाले की भूमिका में रोगी होता है।

3. नैदानिक साक्षात्कार ज्यादातर असंचरित (unstructured) होता है।

4. नैदानिक साक्षात्कार का उद्देश्य तथ्य संग्रह करना है।

नैदानिक साक्षात्कार की उपयोगिताएँ :–

1. साक्षात्कार के आधार पर प्राप्त प्रदत्त रोगी की समस्याओं का समाधान करता है। इसमें तथ्य हावभाव से भी ज्ञात किया जा सकता है।

2. नैदानिक साक्षात्कार के द्वारा भूत, वर्तमान और भविष्य तीनों की समस्याओं को समझने में मदद मिलती है।

3. यह नैदानिक संग्रहण में मदद करती है, क्योंकि इसकी पहुँच (approach) बहुत आसान है।

4. यह प्राथमिक तथा बहुत शक्तिशाली प्रविधि है परीक्षण की तुलना में।

5. यह सामाजिक जीवन जैसी एक परिस्थिति है।

नैदानिक साक्षात्कार के प्रमुख दोष :

1. यह पक्षपात (bias) तथा पूर्वधारणा (Prejudice) से प्रभावित होती है।

2. यह खर्चीली तथा अधिक समय लेता है।

3. इसमें कभी-कभी रोगी घबड़ा (Nervous) जाता है।

4. कभी-कभी इसके माध्यम से अनावश्यक तथ्य संग्रह हो जाते हैं।

5. यह प्रक्रिया कभी-कभी इतनी लम्बी हो जाती है कि उसे सम्भालना मुश्किल हो जाता है।

6. इसकी वैधता बहुत कठिन है, क्योंकि साक्षात्कार उद्देश्य पर निर्भर करता है।

इन सभी कमियों के बावजूद साक्षात्कार का अपना महत्व है जो नजर अन्दाज नहीं किया जा सकता है। क्योंकि इसका उपयोग नैदानिक मनोविज्ञान में बहूद्देशीय है।

9.2.3 नैदानिक मनोविज्ञान में परीक्षण की उपयोगिता (Overview of uses of Psychological tests for clinical purposes)

नैदानिक उपयोग के लिए परीक्षण का प्रयोग मनोविज्ञान में किया जाता है। इसमें कई प्रकार के परीक्षणों का उपयोग किया जाता है जैसे–बुद्धि परीक्षण, अभिवृत्ति, व्यक्तित्व परीक्षण, अभियोजन तथा मनोवृत्ति परीक्षण इत्यादि।

एक परीक्षण के अनुसार Lubin, Wallis तथा Paine (1971), मनोविज्ञान में दस परीक्षण का उपयोग किया गया है जिससे रोगी के व्यक्तित्व तथा बुद्धि परीक्षण के माध्यम से मूल्यांकन किया जाता है। बुद्धि परीक्षण में सामान्यतः तीन प्रकार के परीक्षण का इस्तेमाल किया जाता है।

1. WAIS (Wechsler Adult Intelligence Scale)
2. WISC (Wechsler Intelligence Scale for Children)
3. Stanford-Binet Test.

इन तीनों परीक्षणों के अलावा कुछ व्यक्तित्व परीक्षण भी इस्तेमाल किए जाते हैं, इसमें प्रमुख हैं–

1. R.T. (Rorschach Test)
2. T.A.T. (Thematic Apperception Test)

3. Draw-A-Person Test

4. House Tree person

5. Rotter Incomplete Sentences Blank. इत्यादि।

इसके अलावा कुछ व्यक्तित्व आविष्कारिकाएँ भी इस्तेमाल की जाती हैं, जैसे–MMPI, Bender Gestatalt Visual Motorl tests आदि का इस्तेमाल मानसिक रोगों के कारणों को समझने के लिए किया जाता है।

नैदानिक मनोविज्ञान में मनोवैज्ञानिक परीक्षणों का इस्तेमाल निदान (diagnosis) के उद्देश्य से किया जाता है, ताकि उनका बुद्धि मापन हो, उनकी प्रेरणाओं का पता चल सके, उनके संघर्ष, रक्षायुक्तियाँ, वातावरण, स्व-मूल्यांकन, अभिरुचियाँ, मनोवृत्तियाँ तथा सम्पूर्ण व्यक्तित्व के संगठन के उद्देश्य से किया जाता है। इस प्रकार के परीक्षण से रोग के कारणों का पता चलता है। इसके अलावा कुछ अन्य ऐसे परीक्षणों का इस्तेमाल मस्तिष्क सम्बन्धी रोगों (Brain Pathology) को पता लगाने के लिए किया जाता है।

उपर्युक्त वर्णित परीक्षणों के द्वारा मानसिक आरोग्यशाला में रोगी के कुसमायोजन का अध्ययन करने के लिए किया गया है। सर्वप्रथम रोगी की मानसिक क्षमता को ज्ञात करने के लिए किया जाता है।

बुद्धि परीक्षण की नैदानिक उपयोगिता (Utilities of intelligence test) निम्नलिखित है :–

1. यह व्यक्ति की समायोजन सम्बन्धित समस्याओं को जानने के लिए किया जाता है। इससे संवेगात्मक समस्याएँ प्रभावित होती हैं। इससे कई परिकल्पना का भी निर्माण कर सकते हैं।

2. बुद्धि परीक्षण के उपयोग से प्रभावपूर्ण रिजल्ट प्राप्त कर निदान में फायदा हो सकता है।

3. परीक्षण के उपयोग से मानसिक रोगों का वर्गीकरण किया जा सकता है, जैसे–मनः स्नायुविकृति में, बुद्धि परीक्षण में ज्यादा अंक (higher score), वाचिक परीक्षण (verbal test) जबकि हिस्टीरिया में क्रियात्मक परीक्षण (performance test) में ज्यादा अंक (higher score) मिलते हैं।

गारफिल्ड (Garfield, 1957) ने बुद्धि परीक्षण की निम्नलिखित उपयोगिताएँ बताई हैं–

1. सामान्यतः बुद्धि परीक्षण की उपयोगिता रोगी के बुद्धि क्षमता को निर्धारित करने के लिए की जाती है, परन्तु I.Q. के बारे में यह कहा जाता है कि बुद्धि का सही Index नहीं है तथा विभिन्न प्रकार के परीक्षण का इस्तेमाल करने पर I.Q. भिन्न-भिन्न आता है। यह कई अन्य तत्वों से प्रभावित होता है, जैसे–स्वास्थ्य, संवेगात्मक तनाव तथा चिंता।

2. व्यक्तित्व में विकृति की सूचना (Indications of Personality disorders) : बुद्धि परीक्षण की उपयोगिता व्यक्ति के व्यक्तित्व में असंगठन (disorganization), किस बौद्धिक क्रिया से होता है इसका पता लगाता है। बुद्धि परीक्षण से कई प्रकार की क्षमताओं का पता चलता है, जैसे–सामान्य बुद्धि क्षमता, ईर्ष्या, अभिरुचि का अभाव, प्रेरणा की कमी, कमजोर याददाश्त तथा कई प्रकार की शारीरिक कमजोरियाँ।

3. बुद्धि का मापन निदान के लिए एक फिक्सड प्रश्नों के सेट प्रस्तुत करता है तथा इसके द्वारा कई विशेषताओं का पता चलता है। जैसे–निराशा को सहने की क्षमता, ध्यान कायम रखना, संवेगात्मक स्थिरता, दबाव के साथ प्रतिक्रिया तथा कई ऐसे व्यक्तित्व की विशेषताओं का पता लगाता है।

4. बुद्धि परीक्षण के इस्तेमाल से मनोवैज्ञानिक रोगी के बारे में कई विशेष विशेषताओं तथा क्षमताओं का पता लगाता है।

5. इससे मानसिक रोग तथा मस्तिष्क आघात का पता लगाया जाता है।

बुद्धि परीक्षण के अलावा कुछ व्यक्तित्व परीक्षण तथा आविष्कारिकाएँ प्रयोग की जाती हैं जिसको दो मुख्य समूहों में बाँटा गया है–

1. व्यावहारिक अध्ययन (Behaviour studies) : इस प्रकार के अध्ययन में हाव, भाव, मांसपेशियों की गति, मनोवैज्ञानिक अवस्था तथा अभिवृत्ति आदि का पता चलता है। पहले से भी इसका पता किया गया कि "Personalities in their body". जैसा कि बाइबल में भी कहा गया है कि एक नटखट आदमी, दुष्ट आदमी हमेशा आगे गति करता है। गति का तात्पर्य यह है कि व्यक्ति के व्यक्तित्व की एक भाषा होती है जिसे चिकित्सक तथा अन्य लोग भी आसानी से पहचान लेते हैं।

इस प्रकार व्यवहार के अध्ययन को नजरअन्दाज नहीं किया जा सकता है। इसके द्वारा व्यक्ति के व्यवहार के कई अन्य विशेषताओं का पता चलता है।

2. प्रक्षेपण परीक्षण की नैदानिक विशेषताएँ (Clinical Utility & Projective tests) : प्रक्षेपण विधि व्यक्तित्व को मापने की आधुनिक विधि है जिसे एक निश्चित परिस्थिति में सम्पन्न किया जाता है। सर्वप्रथम इस शब्द का प्रयोग Frank ने 1939 में किया। फ्रायड ने इस शब्द का प्रयोग रक्षा युक्तियों (defense mechanism) को स्पष्ट करने के लिए किया। इसमें R.T. तथा T.A.T. का प्रयोग किया जाता है।

(i) रोर्शाक परीक्षण (Rorschach Test) : इस परीक्षण की उपयोगिता व्यक्तित्व मापन के लिए किया जाता है। इसकी प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं–

1. रोर्शाक (एक स्वीस मनःचिकित्सक) ने अपने शोध के आधार पर इस परीक्षण का प्रतिपादन किया। सन् 1911 में रोर्शाक ने स्याही के धब्बों से व्यक्तित्व परीक्षण शुरू किया। इसमें 10 स्याही के धब्बे को प्रतिक्रिया करनी पड़ती है। इसमें स्कोरिंग करना बहुत मुश्किल कार्य है जो एक अनुभवी चिकित्सक (Skilled clinician) ही कर सकता है।

2. इसमें व्यक्तित्व का मापन असंगठित तत्व तथा परिस्थिति के द्वारा किया जाता है। इसमें रोगी जिस प्रकार उत्तर देता है, उससे उसके व्यक्तित्व का पता चलता है।

3. कुछ मनोवैज्ञानिक जैसे (Weiner, 1971) का मानना है कि रोर्शाक टेस्ट असंगठित साक्षात्कार के जैसा है। संगठित साक्षात्कार में व्यक्ति के व्यवहार के बारे में अनुमान लगाते हैं उनके मूड, भाषा, आंतरिक व्यवहार इत्यादि का।

4. यह निदान का महत्वपूर्ण यंत्र है। इससे सांकेतिक व्यवहार का भी पता चलता है। स्वप्न विश्लेषण, संघर्ष तथा अचेतन आवश्यकताओं का पता चलता है।

5. रोर्शाक परीक्षण से व्यक्तित्व पहचान तथा वर्गीकरण संभव है। जैसे F + का मतलब है यह मनोविदलता की जाँच के लिए किया जाता है। यह चिंता, मनःस्नायु विकृति के लक्षण, ईर्ष्या इत्यादि का पता चलाते हैं।

6. अगर मनोवैज्ञानिक को व्यक्ति की यौन रुचि का पता चल जाए तो इससे निदान में और मदद मिलती है।

(ii) टी० ए० टी० परीक्षण (TAT) Test (Clinical utility of thematic apperception test) : इसे सर्वप्रथम प्रस्तुत Morgan तथा Murray ने किया। इसमें कई तस्वीरें होती हैं जिस पर

प्रयोज्य को एक कहानी लिखना या बोलना पड़ता है।

1. इस परीक्षण के द्वारा चिकित्सक निदान करते हैं जिससे रोगी के मूल्यांकन तथा विश्लेषण में सहायता मिलती है। यह व्यावसायिक निर्देशन, चयन, प्रचार तथा बिजनेस में लाभदायक है।

2. डाना (Dana, 1955) तथा गुडमैन (Goodman, 1952) ने अपने अध्ययन के आधार पर यह बताया कि मनःस्नायु विकृति से ग्रसित व्यक्ति और सामान्य व्यक्ति की कहानी में काफी फर्क होता है। इसलिए T.A.T निदान व चिकित्सा दोनों दृष्टिकोण से लाभदायक है।

3. इसके माध्यम से बुद्धि तथा स्कूल की क्षमताओं के बारे में Predict करना बड़ा आसान है।

4. इस परीक्षण से रोगी की आवश्यकताओं तथा संघर्षों को समझा जा सकता है।

5. इससे विषाद तथा मनोविदलता के बारे में अन्य रोगों के साथ-साथ जाना जा सकता है।

इस प्रकार TAT में रोगी की ओर से कल्पना (imagination), स्वाभाविकता (originality) तथा रचनात्मकता (Creativity) का पता चलता है। यद्यपि इसकी वैधता तथा विश्वसनीयता ज्यादा कठिन है। इसके अंकों तथा विश्लेषण में समानता कम पाई जाती है।

9.2.4 मूल्यांकन (Evaluation)

नैदानिक निदान की विभिन्न विधियों तथा परीक्षणों की व्याख्या ऊपर की गयी है। इनके गुणों तथा दोषों का वर्णन किया गया है। इन उपकरणों में कोई भी पूरी तरह सक्षम नैदानिक उपकरण नहीं है। अतः इन सबका उपयोग सम्मिलित रूप में किया जाना चाहिए। कौरचिन (Korchin, 1986) ने कहा है कि नैदानिक निदान की सफलता बहुत अंशों में उपकरण के चयन की सफलता पर आधारित होती है।

9.2.5 निष्कर्ष (Conclusion)

अतः हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि निदान (diagnosis) नैदानिक मनोविज्ञान में बहुत महत्व रखता है। इससे विभिन्न रोगों की पहचान कर उनका इलाज किया जाता है। निदान के माध्यम से रोगों का वर्गीकरण (classification) संभव है, इसके बाद ही उचित चिकित्सा की जा सकती है।

इस प्रकार अगर निदान नहीं हो तो मानसिक रोगों का इलाज ही न हो। इस दृष्टि से भी निदान की उपयोगिता और अधिक हो जाती है। नैदानिक मनोविज्ञान के लिए निदान आधार स्तम्भ है।

9.3 सारांश (Summary)

इस पाठ के सारांश को हम इस प्रकार प्रस्तुत कर सकते हैं–

1. निदान का तात्पर्य रोगों का वर्गीकरण करना है।

2. कौरचिन (Korchin, 1986) ने निदान को व्यापक और संकीर्ण तरह से परिभाषित किया है।

3. निदान से व्यक्ति (रोगी) के बारे में बहुत तरह के तथ्य इकट्ठा कर लेते हैं।

4. केस अध्ययन के माध्यम से तथ्यों का संग्रह एक फार्म में किया जाता है।

5. रोग के लक्षण तथा कारण का निर्धारण करता है।